ॐ

DHARAVAHIK
KYA KYA KAHOON

(Hindi)

M.K.Raina

Dedicated To My Parents

Stories from धारावाहिक 'क्या क्या कहूं?' :

(कश्मीरी से अनुवाद : लेखक)

१) विलायती घडी
२) खज़ाना
३) स्वर्ग व नरक
४) सम अंक, विषम अंक
५) पास और फेल
६) शादी की दावत
७) शेर का शिकार
८) नबु लालु

विलायती घड़ी

रात को मैं सो न सका। आधी रात हुई होगी जब मैंने दीवार पर टंगी हुई इस घड़ी पर नज़र डाली। यह घड़ी कोई पच्चास साल पुरानी थी। इसका डायल मैला कुचैला, कालिख पुता हुआ था और अंधेरे में इस पर समय देखना आसान नहीं था। मगर मैं भी कुछ कम नहीं था। मैं ने घड़ी की चाल को पूरी तरह जान लिया था। जानता भी कैसे नहीं? अब तो मुझे तीन साल हो गये उस को नये रूप में देखते हुये। सच पूछो तो अब मुझे अंधेरे में भी उस की सुईयाँ साफ दिखायी देती थीं।

अभी रात का एक ही बजा था। पांच बजने में बहुत समय था। चूंकि मुझे नींद नहीं आ रही थी, इसलिये मैं ने समय काटने के लिये घड़ी की ओर ध्यान दिया। यह घड़ी मेरे दादाजी पचास साल पहले अमृतसर से लाए थे। घड़ी की शक्ल सूरत अच्छी थी। इस के तीन कवर थे और अलार्म इतना ऊंचा था कि पूरा मुहल्ला जाग जाये। मेरे पिताजी का कहना था कि यह घड़ी शुरू से ही रेडियो के समय के साथ चलती है, क्या मजाल एक मिनट भी आगे या पीछे चले।

मगर तीन साल पहले इस घड़ी के साथ एक घटना घटी। यह टाँड़ से नीचे गिर पडी और बंद हो गई। चाबी देने पर भी नहीं चली। हमारे मुहल्ले में एक घड़ी साज़ की दुकान थी। उस ने घड़ी को अंदर बाहर ध्यान से देखा और बोला, ''यह ठीक नहीं होगी। इसकी मशीन कुछ अलग ही है, बाकी मशीनों की तरह नहीं।'' उस की बात सुन कर मुझे बहुत गर्व हुआ। भला एक साधारण घड़ी साज़ इस घड़ी को कैसे ठीक कर सकता है? यह थोड़े ही कोई साधारण घड़ी थी! यह असली विलायती घड़ी थी और यह बात हमें दादाजी ने कसम खा कर कही थी।

घड़ी साज़ भले ही घड़ी को ठीक न कर सका, पर था जानने वाला। उस ने मुझे उस घड़ी साज़ का पता बता दिया जो इस तरह की घड़ी को ठीक कर सकता था। मेरे लिये इतना ही बहुत था। मैं अपने दोस्त राजा को साथ लेकर तुरन्त ही गुरगारी मुहल्ला के लिये निकल पड़ा। वहां पहुंच कर मैं ने उस कारीगर घड़ी साज़ को ढूंढ निकाला। उस का नाम था व्वस्तु रज़ाक। उस के कोई दुकान नहीं थी। वह अपने घर में ही घड़ियाँ ठीक करता था।

हम ने जब व्वस्तु रज़ाक के घर पहुंच कर उस के कमरे में प्रवेश किया, हमारी आँखें फटी की फटी रह गयीं। कमरे की टाँडों पर सैकड़ों घड़ियाँ सजा कर रखी हुई थीं, कुछ रूस की, कुछ जापान की और कुछ जर्मनी की। ऐसा मैं ने अंदाज़ा लगा लिया। एक दो घड़ियां शायद भारतीय भी रही होंगी। कुछ घड़ियाँ चल रही थीं और कुछ बंद पड़ी हुई थीं।

हम ने व्वस्तु रज़ाक को सलाम किया। उस ने सरसरी तौर पर हमें देखा और अपना सिर फिर नीचे कर लिया। दर-असल वह एक घड़ी ठीक करने में जुटा हुआ था। ग्राहक भी सामने बैठा था। मैं ने सोचा, यह तरीका ठीक है। व्वस्तु रज़ाक सचमुच बड़ा कारीगर होगा। अपने काम से मतलब, न कोई सवाल न कोई जवाब।

कोई एक घंटे के बाद व्वस्तु रज़ाक ने अपना सिर उठाया। घड़ी के मालिक का चेहरा खिल उठा, यह सोच कर कि काम हो गया। मगर व्वस्तु रज़ाक बोला, ''अमु लाल! आप को कल फिर आना होगा क्योंकि इस घड़ी की एक सूई गुम हो गई है। वह मुझे अब हाथ से बनानी पड़ेगी।'' ग्राहक के चेहरे का रंग उड़ गया। मेरी तरफ देख कर बोला, ''अब बताइये क्या करें? यह घड़ी मेरे पिता जी दूसरे वर्ल्ड

वार के समय कांगो से लाए थे। यह असल में अम्रीका की घड़ी है, पर इसकी सूई कहाँ मिलेगी? अब अगर व्वस्तु रज़ाक इसकी सूई हाथ से बनाता है, वह क्या इस घड़ी पर जचेगी। कहाँ अम्रीका की घड़ी और कहाँ हाथ की बनाई हुई सूई?'' ग्राहक ने कारीगर से घड़ी वापस ली, मुँह बनाया और निकल पड़ा।

व्वस्तु रज़ाक की आयु कोई ५०-५२ की रही होगी। उस ने मेरी तरफ तीखी नज़रों से देखा और बोला, ''देख लो, यह आज के ज़माने का हाल है। मैं इस के लिये कहाँ से अम्रीका की सूई पैदा करूं और घड़ी में लगा दूं। सच तो यह है कि लोग भी पागल हो गये हैं। अगर कोई आदमी कबाडी से भी पुरानी घड़ी खरीद कर लाता है, कहता है कि मेरे एक सम्बन्धी ने विलायत या अरब से लाई है। अरे भई, यहाँ क्या अच्छी अच्छी घडियां नहीं मिलती हैं? खुदा की कसम, कल ही मेरे मंज़ूर अहमद के लिये नयी घड़ी आई है। यह उसके मामा ने कराची से भेजी है। आप को क्या बोलूं, घड़ी है कि क्या? टिक टिक की आवाज़ ऐसी आती है मानो कोयल कूंक रही हो। एक राज़ की बात बताऊं? मंज़ूर अहमद के मामा ने मुझे बताया कि कराची की ही घडियों को अम्रीका वाले अपना नाम देकर बेचते हैं। अरे ओ मंजूरा ....!!'' व्वस्तु रज़ाक अपने बेटे को बुलाने लगा। वह नहीं आया। व्वस्तु रज़ाक धीरे से बोला, ''वह अपने दोस्तों को नई घड़ी दिखाने गया होगा।'' मैं ने सिर हिलाकर हाँ कर दी। असल में मैं उसकी हर बात पर सिर हिलाता था क्योंकि मुझे अपनी घड़ी ठीक जो करानी थी! मैं मन ही मन में सोच रहा था कि पता नहीं, मेरी घड़ी देख कर क्या क्या अपशब्द बोलेगा। मैं इसी सोच में था कि उस की आवाज़ सुनाई दी, ''लाओ भई, तुम्हारा क्या है?''

मैं ने डरते हुये अपनी घड़ी फेरन से बाहर निकाली और उस के सामने रख दी। अपने सीने की धडकन को हाथ से सम्भाल कर मैं उसकी बात सुनने को तैयार हो गया। व्वस्तु रज़ाक ने घड़ी हाथ में ली और बोला, ''अब देख लो, इसे कहते हैं असली विलायती घड़ी। इस को कौन नकार सकता है। खुदा की कसम, किस्मत वाले हो। आज कल ऐसा माल कहाँ मिलता है?'' मैं उस की बात सुन कर बहुत खुश हुआ। मेरा चेहरा खिल उठा। मैं ने कहा, ''यह कल टाँड से गिर गई और बंद हो गई।'' मेरा यह कहना था कि व्वस्तु रज़ाक ने घड़ी नीचे रखी। उस का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। मुझे लगा कि वह अभी मेरी पिटाई कर देगा। वह बोला, ''ऐसे माल की ऐसी बे-इज्जती? आदमी अगर ऐसी चीज़ सम्भाल नहीं सकता तो दरिया में फैंक देना चाहिये।''

व्वस्तु रज़ाक ने मेरी घड़ी एक तरफ रख दी और पूछा, ''तुम कहाँ रहते हो?'' मैं ने कहा, ''बाल गार्डन।'' वह बोला, ''तो जाओ, अपना काम करो। परसों आना, घड़ी तैयार होगी।'' मैं ने पूछा, ''कितने पैसे लगेंगे?'' उस ने अब की बार मेरी तरफ नहीं देखा। वह दूसरी एक घड़ी खोल रहा था। बिना मेरी तरफ देखे बोला, ''पांच रुपये साथ में लाना।'' यह सुन कर मैं अपने घर की तरफ चल पड़ा। मगर मेरा मन परेशान था। कहीं यह मेरी घड़ी के विलायती कल पुरज़े देसी कल पुरज़ों से बदल न दे? लेकिन क्या हो सकता था। कोई उपाय तो था नहीं। उस रात मुझे नींद नहीं आई।

तीसरे दिन दोपहर के समय मैं व्वस्तु रज़ाक के घर पहुंचा। वह खाना खा रहा था। मुझे देख कर बोला, ''लो जी, मुबारक हो। तुम्हारी घड़ी ठीक हो गयी पर तुमको वह रविवार तक यहीं पर रखनी पड़ेगी। तुम बार बार वापस कहाँ आओगे? मैं उस को पूरी तरह टेस्ट करके रखूंगा।'' मुझे तस्सली हुई, चलो घड़ी तो ठीक हो गई। मैं ने खुद अपनी भी तारीफ की, कि ऐसे ज़बरदस्त कारीगर के पास आकर

मैं ने कितना अच्छा किया। साथ ही मैं यह सोच कर भी खुश था कि घड़ी की सूईयाँ भी सही सलामत होंगी। नहीं होती, तो क्या वह बताता नहीं!

मैं ने इधर उधर देखा। मुझे मेरी घड़ी कहीं भी दिखायी नहीं दी। चेहरे का रंग फिर उड गया पर अपने आप को तस्सली दी। मैं ने कहा, ''क्या पता, घडियों के टेस्ट के लिये दूसरा कमरा रखा होगा!''

रविवार को मैं सुबह सवेरे व्वस्तु रज़ाक के घर पहुंचा। उस के सामने एक छोटा लड़का बैठा हुआ था। लड़के की कलाई पर चमकती हुई घड़ी बंधी थी। मैं समझ गया कि यही मंज़ूर अहमद है और इसकी यही घड़ी कराची से आई होगी। मंज़ूर अहमद के हाथ मैं पीतल के दो औज़ार थे जिन्हें वह तख्ती पर लट्टू की तरह घुमा रहा था।

व्वस्तु रज़ाक ने एक थेली में से मेरी घड़ी निकाल कर मेरे सामने रख दी। बोला, ''देख लो, किस तरह घोड़े की चाल से चल रही है। मैं ने घड़ी को गौर से देखा। उस का डायल काला था जबकि मेरी घड़ी का डायल सफेद था। मैं ने कहा, ''आप से कोई भूल हुई है। यह मेरी घड़ी नहीं है। मेरी घड़ी का डायल तो सफेद है।'' व्वस्तु रज़ाक ने आह भर ली और बोला, ''हाँ, तुम्हारा कहना सच है। यह मंज़ूर साहब मेरा बहुत प्यारा है। यह मेरी दूसरी औरत से बहुत दुआओं के बाद पैदा हुआ है। कल इसी ने तुम्हारी घड़ी का डायल उठाया और उसकी फिरकी बना दी। अब बताओ, क्या कहूं? फिर भी खुदा बहुत मेहरबान था। उसी साइज़ का डायल एक पुरानी घड़ी से निकला जो मैं ने इस में लगा लिया, नहीं तो घड़ी काम की ही नहीं रहती।'' मैं ने तकरीबन रोते रोते वह घड़ी अपने हाथ में ली। डायल काला भी था और जीर्ण भी। डायल बदल जाने के लिये व्वस्तु रज़ाक ने एक रुपया कम किया। चार रुपये लिये। ज्योंही मैं सलाम करके वापस जाने को मुडा, उस ने आवाज़ दी। बोला, ''यह अपनी अमानत वापस ले जाओ।'' मेरी समझ में कुछ नहीं आया। ''कौन सी अमानत? ''मैं ने पूछा। मुझे कुछ कहने से पहले ही उस ने मंज़ूर को एक ज़ोरदार थप्पड मारा। मंज़ूर रोने लगा। व्वस्तु रज़ाक ने उसे बोला, ''यह क्या कोई खेलने की चीज़ है? अरे! इतनी कीमत तो तुम्हारे बाप की भी नहीं है।'' इतना कहने के बाद उस ने मंज़ूर अहमद के हाथ से वह दो पीतल के औज़ार छीन लिये और मेरी तरफ बढ़ाते हुये बोला, ''देखो जी, खुदा गवाह है। मैं किसी की चीज़ नहीं रखता हूं। मैं ने जब घड़ी को अलग अलग कर फिर जोड़ना शुरू किया, तो यह दो औज़ार कहीं भी फिट नहीं हुये। अब यह तुम्हारी अमानत हैं, इन्हें सम्भाल कर रखना। अगर घड़ी फिर कभी बंद हो जाती है तो यह औज़ार साथ लेकर मेरे पास आना। क्या पता, उस समय समझ में आये कि यह कहाँ पर लगते हैं। मगर एक बात कहे देता हूं, घड़ी सचमुच विलायती है। औज़ार निकाल कर भी बराबर चलती है। ऐसी घड़ी आज कहाँ मिलेगी?''

मैं बहुत उदास होकर निकल पड़ा। घड़ी से निकाले हुये औज़ार मैं ने छिपा कर रखे कि घर में किसी को पता न चले। मगर व्वस्तु रज़ाक की कारीगरी देखिये, तीन साल के बाद भी घड़ी चल रही है और बराबर समय दे रही है।

एक बार फिर मैं ने दीवार पर लगी इस घड़ी की तरफ देखा। सुबह के तीन बज रहे थे। मुझे पाँच बजे उठना था। मैं ने फिर सोने की कोशिश की और देखते देखते मुझे नींद आ गई।

❄❄❄

खज़ाना

उस दरवेश का चेहरा फिर मेरी आंखों के सामने आ गया। डरावनी शक्ल, ऊंचा कद, बड़ी बड़ी आंखें, कानों में बालियाँ, सिर पर सफेद पगड़ी, गले में सर्प की तरह डाला हुआ गुलूबंद और हाथ में काली माला। दरवेश सचमुच दरवेश ही था या कोई चालबाज़, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। मैं सिर से पैर तक कांप उठा। मुझे उसकी भारी और भयानक आवाज़ फिर सुनाई दी, ''समय ज़्यादा नहीं है। जो मैं कह रहा हूं, वह कर। बस, केवल दो दिनों में वह खज़ाना हासिल करना होगा। बाकी सब तुम्हें मालूम ही है।''

मैं ने इधर उधर देखा। न कोई आगे था और न पीछे। यह केवल उस दरवेश की छाया थी जो मुझे चार दिन से अपने सामने दिखाई दे रही थी। मैं ने अपने आप को सम्भाला। ''मैं इतना घबराया हुआ क्यों हूँ? उस बेचारे ने ऐसा क्या कहा? उसने जो भी कहा वह केवल मेरी मदद करने के लिये ही कहा।'' मैं ने अपने आप से कहा। चार दिन पहले वह मुझे श्मशान के पास मिला था। उसने कहा था, ''तुम्हारी ज़िन्दगी बहुत लम्बी है लेकिन काम सब अधूरा है। क्या क्या करोगे और कैसे करोगे? मेरी बात मानोगे तो तेरा भला कर के जाऊंगा। छः दिन के अंदर तुम्हें सुबह पौ फटने से पहले पखलन पहाड़ी की चोटी पर पहुंचना होगा। वहां पर सब से बडे भोजपत्र के पेड के नीचे एक खज़ाना दफन है। खज़ाने के ऊपर एक नाग बैठा होगा लेकिन वह तुम्हें देख कर ही भाग जायेगा। तुम्हें वह खज़ाना निकाल कर मेरे पास लाना है। आधा तुम्हारा होगा और आधा मेरा। मैं उस नदिया के पार रहता हूँ। हो सके तो अकेले मत जाना, किसी और को साथ में लेकर जाना। खज़ाना बहुत बड़ा है, तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा। तुम्हारी सात पीढ़ियां आराम से खा सकेंगी। बाकी तुम्हारी मरज़ी। पर एक बात याद रखना। यह काम तुम्हें छः दिन के अंदर ही करना है। अगर नहीं हुआ तो मैं किसी दूसरे को भेज दूंगा।''

खज़ाने की बात सुन कर मैं खुश हुआ पर खतरा भी सामने दिखा। मेरे ऊपर बहुत उधार था। ऐसा लगता था कि जीवन भर भी चुका नहीं पाऊंगा। मैं कब शादी करूंगा और कब अपना घर बसाऊंगा? हालांकि दरवेश का चेहरा सामने आते ही मेरी साँस रुक जाती थी, पर खज़ाना याद करके मेरी आँखों में नयी रोशनी आती। मैं ने फैसला किया कि कल सवेरे ही मैं खज़ाना हासिल करने के लिये निकल पडूँगा।

मंज़िल बहुत दूर थी। मैं ने आठ दस रोटियाँ कपडे में बांध कर उठाईं और पौ फटते ही निकल पड़ा। किसी दूसरे को साथ ले जाने का सवाल ही नहीं था। अगर मुसीबत उठानी ही है तो अकेले ही क्या बुरा है। मेरे अंदर क्या हिम्मत नहीं है? दूसरे किसी को साथ लेकर क्यों उसको खज़ाने में शरीक बनाना है?

मैं चलता रहा। पहाडियाँ, जंगल, दरिया, खेत, सब पीछे छोड़ता हुआ मैं दोपहर के समय काली माता के मन्दिर के क़रीब पहुंचा। वहां बहुत भीड़ थी। मैं ने सोचा, लोग आरती करने आये होंगे। मन्दिर के पास पहुंचा तो देखा कि कोई आरती नहीं हो रही है। लोग लाइन में होते हुए भी एक दूसरे को धक्का देकर आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे थे। एक नवजवान लाइन को सीधा करने में लगा था। वह किसी किसी के ऊपर सीधा खड़ा न रहने के लिये हाथ भी उठाता था। मैं ने उस नवजवान से पूछा, ''भाई, यहाँ क्या हो रहा है?'' उसने हँस कर जवाब दिया, ''लगता है, नये नये यहाँ आये हो। तुम्हें कुछ

मालूम नहीं क्या ?'' मैं ने इनकार में सिर हिलाया तो उसने कहा, ''स्वर्ग से धर्मराज ने अपना दूत यहाँ भेजा है और वह स्वर्ग की टिकटें बेच रहा है। जिस किसी को मरने के बाद स्वर्ग जाने का शौक हो, वह अपना टिकट यहाँ पर ही खरीद सकता है।''

टिकट सौ रुपये का था पर मेरी जेब में कुल बीस रुपये थे। मुझे क्या मालूम था कि स्वर्ग की टिकटें अब ज़मीन पर ही बिकने लगेंगी। मैं ने सोचा, ''अच्छा हुआ कि दरवेश की बात सुन कर मैं इस तरफ आया। यह काम भी करके ही रखूंगा। यह अलग बात है कि पैसा पूरा जेब में नहीं है, पर वह क्या उधार नहीं देंगे ? हम थोडे ही कहीं भागे जा रहे हैं! और कल से तो हमारी गिनती भी बड़े बड़े लोगों में होगी। खज़ाना जो घर पर आया होगा!''

मैं ने नवजवान को बहुत नरमी से पैसा पूरा न होने की बात सुनायी। उस ने आश्वासन दिया। बोला, ''कोई बात नहीं। मैं सिफारिश करूंगा।'' उसके आश्वासन पर मैं लाइन में खडा रहा। मेरा चेहरे ऐसा खिल उठा मानो मेरे सिवा कोई भी स्वर्ग में जाने के योग्य नहीं था। यह सोच कर कि नवजवान बाद में धोखा न दे, मैं ने उस के साथ दोस्ती करनी शुरू की। उससे मुझे पता चला कि टिकट बेचने का कैम्प पांच दिन जारी रहेगा। वह नवजवान किसी दूसरे शहर का था और उसे धर्मराज के दूत ही अपने साथ यहां लाये थे। नवजवान के साथ बात करने में मुझे बड़ा मज़ा आ रहा था पर यह मज़ा ज़्यादा देर तक कायम न रहा। ज्योंही उस ने मुझसे पूछा कि टिकट लेकर कहाँ जा रहे हो, मेरे पसीने छूट गये। टांगें कांपने लगीं। मैं ने सोचा, कहीं ऐसा तो नहीं कि उसे खज़ाने की बात का पता चला हो। नहीं तो उसे यह परेशानी उठाने की क्या ज़रूरत कि मुझे कहाँ जाना है ? मैं ने उस की बात का जवाब ही नहीं दिया, पर उस ने फिर कहा, ''क्यों जी, क्या सोच रहे हो ? कुछ कहते क्यों नही ? हम क्या साथ आयेंगे ?'' मैं ने कहा, ''नहीं, ऐसी बात नहीं है। मैं यह सोच रहा था कि टिकट का बाकी पैसा कहां से लाऊं ?'' इस के बाद नवजवान कुछ नहीं बोला और मैं ने भी चुप रहना ही ठीक समझा।

मैं आगे बढ़ता रहा। सामने एक स्टेज बना हुआ था जिस पर एक बुज़ुर्ग बैठा था। उस के साथ ही एक युवक बैठा हुआ था जो लोगों से पैसा वसूल कर रहा था। बुज़ुर्ग स्वयं ही टिकट दे रहा था। मेरी बारी आयी तो मैं ने युवक के सामने बीस रुपये रख दिये। उस ने मुझे तीखी नज़रों से देखा। मैं ने कहा, ''भाई, आज मेरी जेब में इतना ही है। भरोसा रखो, कल बाकी पैसा दूंगा। चाहो तो पांच ज़्यादा ले लेना।'' मगर युवक पर कोई असर नहीं हुआ। उस ने साफ इनकार किया। बुज़ुर्ग मुंह से कोई बात नहीं करता था, केवल इशारा करता था। उसने युवक को पैसे लेने से मना किया। मगर मैं भी कहां मानने वाला था ? मैं वहीं पर डट गया। मेरे पीछे जो लोग थे, उन्हों ने शोर मचाया। मैं किसी सूरत में भी टिकट लिये बिना जाने को तैयार न हुआ।

मेरे पीछे के कुछ आदमी बीच बचाव में आ गये। फ़ैसला हुआ कि २० रुपये देकर मैं केवल टिकट की बुकिंग कर सकता हूं। टिकट तब मिलेगा जब मैं बाकी ८० रुपये दूंगा। मैं ने गनीमत समझा कि चलो एक सूरत तो निकल आई। बुकिंग करके रखूंगा, कल जब खज़ाना लेकर वापस आऊंगा तो बाकी पैसे देकर टिकट ले ले लूंगा। धर्मराज के दूत ने यह बात मान ली। उसने सिर हिला कर मुझे एक परचा दिया जिस पर बीस रुपये की रसीद और टिकट की बुकिंग की बात लिखी हुई थी। मैंने परचा जेब में डाला और चल पड़ा।

चलते चलते मेरे मन में एक खयाल आया। कहीं ऐसा न हो कि कल वह मुझे टिकट देने से इनकार करे, या यह कि मेरे वापिस पहुंचने से पहले ही वह निकल गये हों। मुझे चिन्ता होने लगी। अगर

मैं वापस मुड़ कर घर से पैसा लाता हूं तो पहाड़ी पर जाने को देर हो जायेगी। मैं ने अपने आप को समझाया, ''क्या करेंगे ? लूट है क्या ? बुकिंग नहीं की है ? धोखा करेंगे तो अदालत में जाऊँगा। एक एक करके सब से हिसाब लूँगा।''

पखलन पहाडी के पास पहुंचा तो सूर्य अस्त हो चुका था। अंधेरे में पहाड़ी के ऊपर जाना खतरनाक था। पर रात को कहाँ रहूँ? उस जगह जंगली जानवरों का खतरा भी बहुत था। मेरी नज़र एक देवदार के पेड़ पर पड़ी। पेड़ बहुत बड़ा था और उसकी एक टहनी पर बैठा भी जा सकता था। मैं ने फैसला किया कि रात उस के ऊपर ही काटी जाये। मैं बंदर की तरह पेड़ पर चढ़ गया। टहनी पर पहुंच कर बैठने के लिये जगह बनायी और पोटली खोल कर रोटी खाने लगा। उस के बाद मैं पेड़ पर ही सो गया।

सुबह के चार बज रहे होंगे जब मैं जाग गया। अभी पौ फटने में समय था। मैंने समय ज़ाया करना मुनासिब नहीं समझा। मैं पेड़ से नीचे उतरा। एक छड़ी हाथ में ली और पहाड़ी पर चढना शुरू किया। अँधेरे में कुछ भी साफ साफ दिखायी नहीं दे रहा था पर मैं अंदाज़े से ही रास्ता ढूँढ कर आगे बढ़ रहा था। आगे काँटेदार झाडियाँ थीं। मेरे हाथ पैर काँटों से कट कर छलनी हो गये पर मैं ने हिम्मत नहीं हारी। मैं ऊपर की तरफ चढ़ता रहा। खज़ाने का लालच तो मन में था ही, साथ ही स्वर्ग की बुकिंग से भी हौसला बढ़ गया। दो चार जगह मैं लुढक कर गिर भी पड़ा पर मैं ने हिम्मत नहीं हारी। मेरी आखों के सामने केवल पखलन पहाड़ी की चोटी थी और था खज़ाना। आखिरकार मैं पखलन पहाड़ी की चोटी पर पहुंच तो गया पर अब तक अधमरा हो चुका था। अभी सूरज निकलने में बहुत समय था। मैं एक पेड़ के नीचे लेट गया।

मेरे अनुमान से मुझे लेटे हुये आधा घंटा हुआ होगा कि मेरे कानों में ज़ोर की आवाज़ सुनायी दी। जैसे कोई शेर दहाड़ रहा हो। मैं डर के मारे सहम गया। यहाँ तक तो सही सलामत पहुंचा था पर अब कहीं मुझे शेर न खा जाये! मैं ने इधर उधर देखा, कुछ भी नज़र नहीं आया। बहुत दूर मुझे एक भोजपत्र का सूखा पेड़ नज़र आया। मैं दौड़ कर गया और उसके ऊपर चढ़ गया। मुझे कहीं भी शेर दिखायी नहीं दिया। शायद यह मेरा वहम था।

कुछ देर बाद मैं पेड़ से उतर आया। सूरज अब निकलने ही वाला था। मैने भोजपत्र का बड़ा पेड़ ढूँढना शुरू किया पर दूर दूर तक ऐसा कोई पेड़ नहीं था। अब मैंने गौर से उसी पेड़ को देखा जिस पर मैं शेर के खौफ से चढ़ गया था। उस के नीचे न तो नाग था और न ही मुझे कोई खज़ाना दिखायी दिया। पर मैं ने सोचा कि हो न हो, खज़ाना इसी पेड़ के नीचे दबा होगा और क्या पता, नाग मुझे देख कर ही भाग गया हो!

मैंने स्लेटी पत्थर के टुकड़ों से खोदना शुरू किया। हाथों में छाले पड़ गये। अब सूरज बहुत ऊपर आ चुका था। दो फुट खोद कर भी मुझे खज़ाना नज़र नहीं आया पर मैं ने हिम्मत नहीं हारी। मैं ने सोचा, कुछ समय तकलीफ उठाना पड़ेगा, फिर सारी उम्र ऐश करना है। मैं खोदता गया, दो के बाद तीन और तीन के बाद चार फुट, पर खज़ाना कहीं भी नहीं था।

अब मुझे प्यास लग रही थी। मैं पानी ढूंढने के लिये इधर उधर भटकता रहा पर पानी न मिला। एक जगह मैं ने एक झाड़ी के नीचे हज़ारों की संख्या में कीड़े देखे। झाड़ी के नीचे की ज़मीन गीली थी। मैं ने एक पत्ता उस ज़मीन पर ऐसे बिठाया कि उस का सामने का सिरा लटकता रहे। आहिस्ता आहिस्ता उस पत्ते के ऊपर पानी इकट्ठा होना शुरू हो गया। मैं ने एक और पत्ते को छोटी कटोरी

बनाकर उस के नीचे रख दिया। अब पानी की बूंदें एक एक करके उस कटोरी में गिरने लगीं। इस तरह पानी जमा करने में घंटों लगते पर इस से मेरी आशा बँधी रही।

जब कटोरी में दस बारह पानी की बूंदें जमा हो गईं, मैंने उन्हें अपनी सूखी जीभ पर डाल दिया। मेरे पूरे बदन में ठंडक आ गई। कटोरी को फिर से अपनी जगह पर रख लिया। सूरज अब सिर के ऊपर आ चुका था। मैं दौड़ कर पेड़ के पास पहुंचा ताकि कुछ और खोद कर खज़ाना पा सकूँ। ज्यूँ ही मैं खोदे हुये गड्ढे के पास पहुंचा, मेरे पैरों तले ज़मीन खिसक गई। गड्ढे में एक बडा काला नाग कुंडली मार कर बैठा था। दरवेश की बातें सच निकलने लगीं। नाग मिल गया, आगे खज़ाना भी मिलेगा। दरवेश ने कहा था कि नाग मुझे देख कर ही भाग जायेगा, पर ऐसा नहीं हुआ। वह नहीं भागा। यह सोच कर कि शायद उस की नज़र मुझ पर न पड़ी हो, मैंने उसे शी .... शी.... करके भगाने की कोशिश की और अपने पैर से उसे धक्का दिया। नाग ने पैर लगते ही एक झटके में मुझे काट लिया। मैं तुरन्त ही नीचे गिर पड़ा। आंखों के सामने अंधेरा छा गया और नज़रें पेड़ की तरफ अटक गयीं। शायद मैं मर चुका था।

❄❄❄

स्वर्ग व नरक

मेरे प्राण निकलते ही मेरे सामने दो हट्टे कट्टे जवान पैदा हो गये। यह शायद नये ज़माने के यमदूत थे। चेहरा गोरा था और सींग भी नहीं थे। एक क्लीन शेव था और दूसरे ने फ्रेंच कट दाढ़ी रखी थी।

मैं अभी उन का कद और गठीला जिस्म देख ही रहा था कि उन्होंने मुझे बाहों से पकड़ कर उठा लिया। उस के बाद वह आकाश की ओर उड़ने लगे। मैं हैरान व परेशान था। मैं धरती पर कभी सीधी तरह चल भी नहीं पाता था और यहां उन के साथ साथ मैं भी हवा में उड़ रहा था। हालांकि मेरे हाथ पांव हिल नहीं रहे थे, फिर भी मैं हवाई फौज के जंगी जहाज़ की तरह उड़ रहा था। मैं समझ गया कि मैं मर चुका हूं पर लालच मेरे अंदर अब भी पनप रहा था। मैंने नीचे की तरफ ध्यान से देखा। नाग अब भी गड्ढे में कुंडली मार कर बैठा था। शायद उस को अब भी डर था कि मैं वापस आकर खज़ाने पर कब्ज़ा कर लूंगा।

दुनिया भर का सफर करके हम एक जगह पहुंचे। पर क्षमा करें। यहां दुनिया कहां थी? वह तो मैंने मर कर पीछे छोड़ दी थी। हाँ, यह कहें कि आसमान भर उड़ा कर यमदूत मुझे इस जगह ले कर आ गये। क्लीन शेव यमदूत ने अपनी पतलून की जेब से एक यंत्र निकाला और अपने मुंह के सामने रखा। यह यंत्र बिलकुल ऐसा ही था जैसा हमारी धरती पर टेलीफोन हुआ करता था। इस यंत्र का रंग ढंग अच्छा था। शायद यह भी टेलीफोन ही रहा होगा, पर इस में तार नहीं लगा था। हम ने सुना था कि विलायत में तार के बिना ही टेलीफोन होते थे। शायद इस जवान ने भी वहीं से ही लाया होगा। खैर, मुझे इस से क्या लेना देना। धरती पर मेरा अपने घर में फोन लगाने का शौक धरा ही रह गया था। मेरे पिताजी ने टेलीफोन महकमे में दस साल पहले पांच सौ रुपये भर कर एक टेलीफोन बुक किया था। पर फोन कहाँ मिला? जब मैं इस बारे में अफसरों से बात करने के लिये गया तो उन्होंने कहा, ''अरे यार, तुम पागल तो नहीं हुये हो? यहाँ पर बीस साल पहले बुकिंग किये हुये 'ओन योवर टेलीफोन' वालों को बीस बीस हज़ार रुपये भर कर भी टेलीफोन नसीब नहीं हुआ, तुम केवल पांच सौ भर कर फोन ढूंढ रहे हो।'' मेरे पास कोई जवाब ही न था। अब जब कि दरवेश ने मुझे मदद करने की ठान ली थी, मैं ने सोचा था कि अब की बार मैं भी तत्काल स्कीम में बड़ी कीमत देकर टेलीफोन खरीद लूंगा। पर जिन्दगी ने साथ न दिया। अगर भगवान मुझे खज़ाना ले जाने का समय देता, शायद मैं भी खिड़की पर बैठ कर और फोन हाथ में लेकर मखन लाल को आवाज़ देकर पुकारता ताकि फोन देख कर उस की घिग्घी बंद हो जाती। पर यह सब नहीं हुआ। असल में मेरा नसीब ही खोटा था, पर किसे कहूँ?

मैंने एक लम्बी आह भरी और फिर से यमदूत के फोन को देखने लगा। यमदूत किसी से बात कर रहा था। बीच बीच में वह मेरी तरफ देखता, सिर हिलाता और कभी कभी हंसी का ठहाका लगाता। दूसरा यमदूत अब भी मेरा हाथ पकड़े हुए था।

कुछ देर के बाद यमदूत ने फोन अपनी जेब में रखा और मुझसे मेरा नाम पूछा। मैं ने कहा, ''भाई, धरती पर लोग मुझे प्यार से 'साहब' कह कर बुलाते थे। मगर सच पूछो तो असली नाम कृष्णदास है। कृष्ण का दास कम और अपना दास ज़्यादा।'' क्लीन शेव यमदूत ने मेरी तरफ गौर से देखा पर कोई जवाब नहीं दिया। हम चलते रहे, या यूं कहिये कि उड़ते रहे। आगे घने बादल थे। मेरे शरीर में ठंडक

आ गई। मैं ने यमदूतों के साथ फिर बात करना चाही पर वह दोनों मनहूस निकले। उन्होंने मेरी बातों को अनसुना कर दिया। शर्मिन्दा होकर मैं चुप हो गया।

जब हम बादलों में से बाहर निकले, मुझे सामने एक बड़ी दीवार दिखाई दी। दीवार में दो दरवाज़े थे। एक के ऊपर 'स्वर्ग' लिखा था और दूसरे के ऊपर 'नरक'। मैं बहुत गर्व के साथ स्वर्ग की तरफ बढ़ने लगा कि यमदूतों ने ज़बरदस्ती मुझे नरक की तरफ घुमा दिया। मैं वहां जाना नहीं चाहता था पर मेरी एक न चली। मेरे हाथ पांव मानो सुन्न हो गये थे। नरक के अंदर घुसते ही मेरी आखों के सामने अंधेरा छा गया। मैं ने धरती पर जो कुछ नरक के बारे में सुना था, बिलकुल ऐसा ही था। जगह जगह आग दहक रही थी और यमदूत उस के सामने नाच रहे थे और गा रहे थे। मेरे खयाल से कुकर्मी उस आग में जल रहे थे। कहीं कहीं आदमी पेड़ों से लटक रहे थे। एक जगह लोगों का बड़े भीड़ थी। उन्होंने आसमान सिर पर उठा रखा था। धर्मराज एक मंच पर बैठा हुआ था और उन को सज़ा सुना रहा था। मैं जब उन लोगों के पास पहुंचा तो ऐसा लगा कि मेरे सिर पर आसमान टूट पड़ा हो। भीड़ में मैं ने कई ऐसे लोगों को देखा जो धरती पर बहुत दान-पुण्य किया करते थे। उन की एक झलक पाने के लिये लोग हज़ारों खर्च करके और मीलों पैदल चल कर आते थे। मै ने अपने आप से कहा, ''तो वह सब झूट था!'' मेरे अन्दर की आवाज़ भी मेरे यमदूतों को साफ सुनाई देती थी। मेरी बात सुन कर फ्रेंच कट वाले यमदूत के कान खड़े हो गये। हालांकि उस की समझ में कुछ भी नहीं आया था फिर भी वह बोला, ''आज क्यों इतना चिल्ला रहे हो? वहां क्यों नहीं सोचा? '' मैं ने कहा, ''भाई, मैं वह नहीं सोच रहा जो तुम सोच रहे हो। मैं यह देख कर हैरान हूं कि जिन्होंने धरती पर अच्छे कर्म किये हैं उन में से भी मैं कई एक को यहाँ देख रहा हूं।'' यमदूत शायद सब कुछ जानने वाला था। वह बोला, ''ऐसी बात नहीं है। असल में धरती के लोग होते कुछ हैं, दिखते कुछ और हैं।'' मुझे मेरे सवाल का जवाब मिल गया। मुझे मेरे बारे में तो कोई शक ही न था। मैं तो केवल नरक में जाने के लिये ही जन्मा था। अगर कभी मैं ने कोई अच्छा कर्म किया भी था, वह मैं ने उसी समय दुनिया भर को सुना सुना कर बेच दिया था। दुनिया में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जिसे मैं जानता था और जिसे मैं ने अपने किये हुये अच्छे कार्य के बारे में चिल्ला चिल्ला कर न बताया हो। पर अब मैं इन लोगों के बारे में सोच रहा था जिन का दुनिया में बहुत नाम था और जिन की शुमार अच्छे लोगों में होती थी। मेरी नज़रों के सामने ऐसे कम से कम एक दर्जन आदमी थे जो इस समय धर्मराज से विनती कर रहे थे। यह अच्छा हुआ कि उन की नज़र मेरे ऊपर न पड़ी, नहीं तो मेरे सामने भी उनका अपमान हो जाता और मुझे पाप लगता।

मेरे लिये शायद कुदरत ने अच्छा ही सोचा था। मैं ने स्वर्ग की बुकिंग की थी और बुकिंग की रसीद अब भी मेरी जेब में थी। मैं ने यमदूत से अपना हाथ छुड़ाया और एक पत्थर पर बैठ गया। वहां घास थोड़े ही था कि आदमी उस पर बैठ कर सुस्ता लेता। फ्रेंच कट वाले ने मेरी तरफ गौर से देखा ओर पूछा, ''क्यों, अभी से हार कर बैठ गये? आगे और भी बहुत कुछ है।'' मैं ने कहा, ''नहीं, ऐसी बात नहीं है। बात यह है कि मैं ने धरती पर ही स्वर्ग की बुकिंग की है। यकीन न हो तो रसीद दिखा दूं?'' यमदूत को यकीन नहीं हुआ। वह बोला, ''अरे यार! तुम जैसे फटीचर के पास स्वर्ग की टिकट कहां से आई? स्वर्ग की टिकटें क्या रास्ते में पड़ी होती हैं कि तुम ने भी एक उठा ली। दिखाओ तो सही!''

मैं ने जेब से पर्ची निकाली और उस को दिखादी। पर्ची पर अच्छा भला धर्मराज के दूत का निशान था। यमदूत के चेहरे का रंग बदल गया। उस ने पर्ची अपने साथी को दिखायी। फिर दोनों ने किसी और ही भाषा में आपस में बात की। शायद संस्कृत में। मैं कुछ भी न समझा। हमने कब संस्कृत पढ़ी थी?

हम भगवद्गीता के भी पहले पांच या सात श्लोक ही पढ़ सकते थे, वह भी इस लिये कि हमें वह ज़बानी याद थे। नहीं तो कहाँ हम और कहाँ संस्कृत भाषा ? हमारे माता पिता भी अंग्रेज़ी पढ़ने पर ही ज़ोर देते थे। कहते थे कि संस्कृत पढ़ कर क्या करोगे ?

मैं आँखें फाड़ फाड़ कर उन दोनों को देख रहा था। फोन वाले यमदूत ने मेरी बाँह पकड़ी और बोला, ''भई, हमारी कोई गलती नहीं है। हमें जो बोला गया, हम ने वही किया। चलो, धर्मराज को यह परची दिखाते हैं। वही बता सकते है कि आगे क्या करना है।'' मैं ने अब अपने आप को बहुत भाव दिया। मैं ने कहा, ''बस, यहाँ से आगे मैं एक कदम भी नहीं चलूंगा। आप को जाना है तो जाओ, मैं यहीं पर बैठ कर आप की प्रतीक्षा करूंगा।'' उन्होंने मुझे वहीं पर बैठने की अनुमति दी और स्वयं धर्मराज से मिलने गये। उन के वापस आने तक मैं यहाँ वहाँ देखता रहा। मेरे आगे पीछे जो हो रहा था, वह देख कर ही मैं भय से कांप उठा। मैंने भगवान कृष्ण का ध्यान किया और उससे कहा, ''भगवन, मुझे इस के आगे बचा लेना। मैं जैसा हूं वैसा हूं, पर मेरे नाम के साथ तुम्हारा नाम भी जुड़ा है ना! अगर मुझे सज़ा होती है तो तुम्हारी भी बदनामी होगी। लोग बोलेंगे कि कृष्ण को नरक मिला।''

शायद मेरी विनती कृष्ण भगवान ने सुन ली। दोनों यमदूत हंसते हुये वापस आये और बोले, ''भई, तुम्हारी आधी मुश्किल तो हल हो गई। पर तुम्हारे नाम पर अब भी ८० रुपये बकाया हैं। अगर तुम ८० रुपये देते हो तो हम तुम्हें आज ही स्वर्ग में ले जायेंगे।'' मेरी जेब में कोई पैसा न था। मैं ने उन से विनती की, ''मुझे उधार दे सकते हो क्या ? बाद में मैं वापस कर दूंगा। स्वर्ग में कोई न कोई तो अपना होगा, पैसे वाला।'' उन्होंने जवाब दिया, ''हमारे पास पैसा कहाँ है ? यहाँ समय पर किस को वेतन मिलता है ? तुम विश्वास करोगे क्या कि हमें तीन महीनों से वेतन नहीं मिला। तुम लोग सोचते होंगे कि हम यहाँ पर ऐश करते हैं! अरे भई! हम ही जानते हैं कि हम पर क्या गुज़रती है ? '' मैं यह सच्चाई जान कर हैरान रह गया। मैं ने पूछा, ''यहाँ बजट वजट कुछ नहीं होता है क्या ? वह पैसा कहां जाता है ?'' उन्हों ने आह भरी। बोले, ''होता क्यों नही, होता है। पर वह सारा पैसा देवताओं के टी.ए. और डी.ए. पर खर्च होता है।''

''टी.ए. और डी.ए. ? कैसा टी.ए. और डी.ए. ?'' मैं हैरान हो गया। उन्होंने विस्तार से बताया, ''वह हर दिन लाव-लश्कर लेकर पृथवी लोक व पाताल लोक जाते हैं ना! वहाँ पर वह ज़्यादा दिन तो नहीं ठहरते लेकिन वहाँ तक जितना लम्बा फासला है, वह उस के हिसाब से ही पैसा लेते हैं। अब पैसे बचेंगे तो कैसे ? हम भी चुपचाप सब कुछ बरदाश्त कर लेते हैं। और कर भी क्या सकते हैं ? यहाँ थोड़े ही तुम्हारे वहाँ के जैसा हाई कोर्ट या सुप्रीम कोर्ट है ? देवतागण जो बोलेंगे, वही अटल है।''

यह सब बातें सुन कर मैं काँप उठा। मैं ने सोचा इस हिसाब से तो धरती पर ही स्वर्ग है। वहां पर कोई आदमी सौ कदम भी ज़ोर ज़ोर से बात करते हुये चले तो दस जगह राह चलने वाले पूछेंगे कि भाई, तुम को क्या तकलीफ है ? यहाँ की तो दुनिया ही निराली है। हम ने ऐसी बात कहाँ कभी देखी है। धरती पर एक दिन के लिये भी किसी का वेतन बंद करेंगे तो वह हाई कोर्ट तक पहुंचेगा।

लेकिन इस समय इस मसले पर बात करना मुनासिब नहीं था। इस समय सवाल था ८० रुपये का। मैने फोन वाले यमदूत से, जो दोनों में सीनियर जान पड़ता था, कहा, ''भई, मुझे तुम अपना छोटा भाई ही मान लो। ऐसा करते हैं कि तुम मुझे वापस उस भोजपत्र के पेड़ तक ले जाओ। अगर नाग भाग गया होगा तो मैं खज़ाने पर अपना कब्ज़ा कर लूंगा। यदि ऐसा करोगे तो आधा तुम्हारा, आधा मेरा। अगर तुम्हें यह लगता है कि मैं भाग जाऊंगा, तो मेरी टांगों को बांध कर रखना।'' लेकिन बात नहीं

बनी। उन्होंने कहा कि एक बार परलोक आकर वापस जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। मैंने उन के पाँव पकडे कि कोई तरीका हो तो देख लो। आखिर मैंने स्वर्ग की बुकिंग करने में जो २० रुपये खर्च किये हैं, वह क्या यूंही ज़ाया हो जायेंगे?

फोन वाले दूत ने दूसरे दूत के साथ मशवरा किया। उस के बाद उस ने जेब से फिर फोन निकाला और किसी से बात की। उस के चेहरे से लगता था कि काम होने वाला है। कुछ समय बात करने के बाद उसने फोन जेब में रखा और कहा, ''हाँ, एक रास्ता है। अगर तुम ने धरती पर किसी भिखारी या फकीर को कोई पैसा दिया है, वह यहाँ गिना जायेगा।'' मुझे याद आया। मैने उसी दरवेश को नया ताज़ा १०० रुपये का नोट दिया था जिस ने मुझे खज़ाने का पता बताया था। और यही एक बात मैं ने सब से छिपाकर रखी थी, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि कोई इस राज़ को जान जाये। मैं ने यमदूत से कहा, ''हाँ, दिया क्यों नहीं है? मैं ने एक दरवेश को पूरे सौ रुपये दिये हैं। अब तुम कहोगे रसीद दिखाओ, वह तो नहीं है।''

जवान ने फिर फोन पर बात की और सिर हिलाया। बोला, ''किस्मत वाले हो। सचमुच यही एक बात तुम ने किसी को नहीं सुनायी है और इसी पुण्य का फल तुम्हें अब मिल रहा है। चलो, अब स्वर्ग की तरफ चलो।''

हम स्वर्गलोक की तरफ उडने ही वाले थे कि मुझे पीछे शोर सुनाई दिया। लोगों में से मेरे कुछ जानने वालों ने मुझे देख लिया था। वह दौड़ कर आए और मेरे पैर पकड़ लिए। मुझ से बोले, ''हम यहाँ अकेले पड़ गये हैं। मन नहीं लग रहा है। केवल तुम ही हमारी हिम्मत बंधा सकते हो। कृपया स्वर्ग में मत जाओ। हमारे साथ ही रहो। क्या हम ने धरती पर तुम्हारे हर सच झूट में तुम्हारा साथ नहीं दिया था? अब क्यों हमें देख कर मुंह फेर लेते हो।'' मैं ने देखा, इन लोगों में गोकुल भी था, जिस का सब कुछ मैं ने लूट कर हडप किया था। इस समय वह कुछ ज़्यादा ही बोल रहा था।

मैं ने सोचा, अगर मैं इन की बात सुनता हूं तो यह अवसर मेरे हाथ से निकल जायेगा। कितनी दौड़-धूप करके मुझे स्वर्ग में जाने का अवसर मिला है, और अब यह लोग पैदा होगये। अरे मैंने तुम लोगों का क्या खाया है? धरती का हिसाब तो धरती पर ही खत्म हो गया। जाओ, तुम अपनी जगह, मैं अपनी जगह। मैं ने उन से नम्रता से कहा, ''मैं तुम लोगों को जानता ही नहीं। मेरे पीछे क्यों पड़ गये हो? जाओ अपना काम करो।'' मैं ने यमदूत को इशारा किया कि जलदी स्वर्ग की तरफ चलो। उन्होंने मेरी बाँह पकड़ी और मुझे लेकर स्वर्ग की तरफ उड़ने लगे। मगर मेरी किस्मत खराब थी। ज्योंहीं मैं ऊपर की ओर उड़ने लगा, गोकुल ने मेरी टाँग पकड़ ली और मुझे ज़ोर से खींचा। मैं एकदम गिर कर पत्थर की दीवार से टकराया और मेरा सिर फूट गया।

इस के साथ ही मैं नींद से जाग उठा। मैं ने देखा, मेरी माँ मेरी टाँग पकड़ कर मुझे हिला रही थी और कह रही थी, ''अब उठो भी! परबत नहीं जाना है क्या? देर हो गई। तुम्हारे यह दोस्त कब से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।''

❄❄❄

सम अंक, विषम अंक

मैं ने अपनी आंखें मीच लीं।। यह सब मेरा स्वप्न था। मैं ने घड़ी की तरफ देखा, पांच बज रहे थे। दरवाज़े पर मेरे तीनों मित्र विजय, राजा और निका मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। मैं उठ कर अपने आंगन में पहुंचा और मुँह हाथ धो लिया। धोबी का धुला कुर्ता पाजामा पहना और मित्रों के साथ परबत की ओर चल पडा।

दर असल इस दिन मैट्रिक का परिणाम आने वाला था। हम ने रात को ही निश्चय कर लिया था कि सुबह पौ फटने से पहले हम परबत जायेंगे। वहाँ देवी की परिक्रमा भी करेंगे और साथ ही गणेश बल जाकर चावल के दाने भी उठायेंगे। हमारी किस्मत में जो होगा, वह वहीं पता चलेगा।

थोड़ा थोड़ा उजाला था। हम तेज़ कदमों से चलते रहे। सफा कदल, नवा कदल, आली कदल और नवहट्टा से होकर हम गणेश बल पहुंचे। वहाँ एक दूसरे को स्वयं ही तिलक लगाया, यह सोच कर कि पंडित जी के पास जायेंगे तो वह आरती के लिये धूप दीप पकड़ा देगा। हमारी जेब में फूटी कौड़ी न थी और इस तरह धूप दीप का पैसा न देने से सब के सामने हमारा अपमान होता। हम ने गणेश जी को प्रणाम किया, माथा टेका और आगे की ओर निकल पड़े। आगे वह पेड़ था जिस के नीचे लोग पक्षियों के लिये चावल के दाने डालते थे। लोग यही चावल के दाने उठा कर अपनी किस्मत आंकते थे। खास कर, बच्चे यह देखने के लिये कि वह पास होंगे या फेल, दाने उठा कर गिनते। असम अंक हो तो पास, सम अंक हो तो फेल। ज्यूं ज्यूं पेड़ निकट आता गया, त्यूं त्यूं मेरी टांगें ज़्यादा कांपने लगीं।

सब से पहले निका ने चावल के दाने उठाये और विजय के हाथ में दिये। उसका चेहरा पीला पड़ रहा था। निका हमारा लीडर था इसलिये हर काम पहले उसे ही करना पड़ता था। विजय ने दाने गिने, पूरे ग्यारह थे। वह बोला, ''पूरे ग्यारह हैं।'' मतलब असम अंक और पास। निका का चेहरा फिर से खिल उठा। इस के बाद विजय ने और फिर राजा ने दाने उठाये। विजय के १९ दाने थे, मतलब वह भी पास था। राजा के साड़े पंद्रह, याने १५ पूरे और एक आधा। हम सब ने आधे पर विचार किया। फैसला हुआ कि आधा गिनने में नहीं आयेगा, इसलिये वह १५ ही हुये। परिणाम यह हुआ कि राजा भी पास होगया। मेरी हिम्मत बढ़ गई। मैं ने सोचा आज का दिन अच्छा है। सब का ही असम अंक निकलता है तो मेरा क्यों नहीं निकलेगा ? मैं ने ज़ोर से हाथ मार कर चावल उठाए और निका को दिये। चूंकि मैं अपनी पार्टी का डिप्टी लीडर था इसलिये मेरे चावल गिनने का हक केवल निका को ही था। निका ने गिन लिए, एक बार, फिर दूसरी बार। मैं अपना दिल पकड़ कर उस के जवाब की प्रतीक्षा कर रहा था। निका ने चावल के दाने वापस मेरे हाथ में दिये और बोला, ''भाई. यह २६ हैं। न कम न ज़्यादा।'' मैं परेशान हुआ। इस का मतलब था कि केवल मैं ही फेल था, बाकी सब पास। ऐसा कैसे हो सकता है ? राजा ने तो अपने सब पर्चे मेरी नक्ल करके ही लिखे थे। वह कैसे पास होगा और मैं फेल। मैं ने उन से कहा, ''कहीं तो कोई गलती हुई है। मैं फिर से चावल उठाता हूं। जो निकलेगा, मैं मान लूंगा।'' मैं ने दूसरी बार चावल उठाये पर इस बार गिनने के लिये राजा को दिये। उस ने गिने, पूरे १७ थे। मैं खुश हुआ लेकिन निका ने मेरी खुशी छीन ली। उस ने कहा, ''एक गुरू ने कहा है यदि शक हो तो तीसरी बार देखना चाहिए।'' बाकी लड़के उसकी बात से सहमत हुए। डर के मारे मेरा पसीना निकलने लगा। जैसे तैसे मैं ने एक बार फिर चावल के दाने उठाये और स्वयं ही गिन लिये। लेकिन किस्मत ने साथ

नहीं दिया। अंक फिर सम ही निकला। मेरी टांगें कांपने लगीं। चौथी बार देखने का सवाल ही नहीं था। पर मेरे मन में एक खयाल आया। अगर भगवान को मुझे फेल ही करना होता तो दूसरी बार असम अंक क्यों देता। मैं ने सोचा, दूसरी बार का ही अंक ठीक है। मैं ने मित्रों से पूछा, ''यह तीसरी बार के लिये किस गुरू ने बोला था?'' उन्हें ठीक से मालूम नहीं था। वह बोले, ''हम ने लोगों से सुना है पर गुरू का नाम मालूम नहीं है।'' मैं ने कहा, ''फिर तो रहने दो। जो दूसरी बार का अंक था, वही सच है।''

मेरी इस बात से मेरे मित्रों को भी तस्सली हुई। क्योंकि हम तो चाहते ही थे कि सब पास हों। उन्होंने मेरी बात को पूरी तरह स्वीकार किया। निका बोला, ''गुरू की बात असल में गलत ही है। मुझे लगता है कि यह बात किसी स्वार्थी आदमी ने अपने मतलब के लिये फैलायी होगी।'' साथ ही उस ने मुझे बधाई दी, जिस का मतलब था कि दूसरी बार का ही अंक सही था और इसलिये मैं अपने आप को पास ही समझूं। दूसरे लड़कों ने भी मुझे बधाई दी। इस के बाद हम देवी की परिक्रमा करने लगे। हमारे पीछे पीछे दो और लड़के और तीन लड़कियाँ आ रही थीं। उन्होंने भी हमारे बाद चावल के दाने उठाये। शायद उन का भी आज परिणाम आने वाला था।

रास्ते में हमें जहां कहीं भी मंदिर या मूर्ती नज़र आई, हम ने अपना माथा टेका। जहाँ कहीं सिंदूर वाला पत्थर मिला, हम ने उसे हाथ से छू कर आंखों को लगाया। हमारी इच्छा केवल यह थी कि रेडियो पर परिणाम बोलने वाला हमारा रोल नम्बर भी बतादे।

परिक्रमा कर के जब हम काठी दरवाज़े पर पहुंचे, वहाँ सब्ज़ी वाले सब्ज़ी बेच रहे थे। निका की माँ ने उसे हंद लाने को कहा था। एक सब्ज़ी बेचने वाली औरत के पास हंद की तीन गठरियाँ थीं। हम उस के साथ सौदा करने लगे। इतनी देर में एक अधेड़ अवस्था का आदमी आया। उस ने यह हंद अपनी थेली में डाल दी और सब्ज़ी बेचने वाली औरत को अठन्नी देने लगा। हम ने शोर मचाया। मैं ने कहा, ''श्रीमान, यह हंद तो हम ने पहले ही खरीदी है। आप ने कैसे अपनी थेली में डाल दी?'' आदमी बहुत तेज़ मिज़ाज का था, बोला, ''तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हुआ? ज़्यादा बोलोगे तो कुचल कर रख दूंगा? मैं ने क्या यह नगद अठन्नी देकर मोल नहीं ली?'' निका को भी गुस्सा आया। वह बोला, ''आप ने हमें क्या बच्चा समझ कर रखा है? हम तुम्हारी यह थैली फाड़ कर रख देंगे। शराफत से हमारी हंद वापिस कर दो।'' देखते ही देखते बहुत सारे लोग जमा हो गये। वह दो लड़के और तीन लडकियाँ भी सामने आ गईं जिन्होंने हमारे बाद चावल के दाने उठा कर अपनी किस्मत आज़माई थी। उन के चेहरे खिल हे थे। शायद उन सब का अंक असम ही रहा होगा।

एक बुज़र्ग आदमी और इन लड़कों और लड़कियों ने हमारा पक्ष लिया। सब्ज़ी बेचने वाली औरत को भी हमारी बात माननी पड़ी। अधेड़ अवस्था का आदमी अपनी थेली से हंद वापस निकालने पर मजबूर हुआ। हम ने उसे अठन्नी पकड़ाई और वह चल दिया। इस के बाद हम लड़कों और लडकियों से बात करते करते घर की तरफ निकल पड़े।

कुछ देर चल कर लड़कों और लड़कियों ने हम से आज्ञा मांगी। हम ने उन्हें हमारा पक्ष लेने के लिये धन्यवाद दिया। उन में से एक को याद आया। वह बोला, ''आप की हंद कहां है?'' हम ने देखा, उस आदमी के साथ झगड़े में हम अपनी हंद उठाना ही भूल गये थे। हम दौड़ कर वापिस गये। काठी दरवाज़े पर पहुंचे तो वहां न सब्ज़ी बेचने वाली औरत थी और न हमारी हंद। हम ने सोचा, मर गये। घर में पीट पीट कर हमारी धुलाई कर के रखेंगे। हम मित्रों में से जब भी कोई गलती करता था, मार हम सब को पडती थी। सब जानते थे कि हम एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं। खास कर हम निका के भाई,

जिन्हें हब बॉयटोठ कहकर पुकारते थे, से डरते थे। वह पिटाई करते समय आगे पीछे कुछ नहीं देखता था पर हमें प्यार भी बहुत करता था। जो कुछ वह निका के लिये लाता, हमारे लिये भी अवश्य लाता।

हम ने रास्ते में ही सोच विचार करना शुरू किया कि अब क्या किया जाये। अठन्नी भी वापस नहीं आयेगी और हंद भी नहीं मिलेगी। राजा बड़ा अक्लमंद निकला। उस ने कहा, '' मेरी बात मानो तो मेरे पास एक उपाय है।'' हम ने कहा, जल्दी कहो। उस ने कहा, ''गणेश बल के पास मैं ने बहुत नुनर उगी हुई देखी है। कहो तो एक अठन्नी के मूल्य की वही नुनर निकाल कर घर ले जायेंगे।'' निका गुस्से से तिलमिलाया। उस ने राजा से कहा, ''पागल हुये हो क्या? हमें नुनर चाहिये कि हंद?'' राजा वापस बोला, ''थोड़ा अक्ल से काम लो। लानी तो थी हमें हंद, मगर यह कि आज हंद मिली ही नहीं। आज केवल नुनर बिक रही थी।'' यह सुन कर निका उछल पडा। बोला, ''उपाय बहुत अच्छा है। चलो जल्दी करो।'' फिर क्या था? हम सब गणेश बल की तरफ दौड पड़े।

जब हम वापस घर पहुंचे तो दस बज रहे थे। निका के बदले मैं बॉयटोठ के पास गया, नुनर सामने रख दी और कहा, ''आज हंद कहीं भी नहीं मिली। वहाँ हर जगह केवल नुनर बिक रही ती। सब लोग थैलियाँ भर भर के ले जा रहे थे, हम ने भी ली।'' बॉयटोठ ने नुनर हाथ में ली और बोला, ''बढ़िया ताज़ा नुनर है। अच्छा किया जो लेकर आये।'' हमारी जान में जान आ गई।

बारह बजे रेडियो से परिणाम आने वाला था। मैं मन ही मन में बहुत परेशान था। मैं ने बहस करके दूसरी बार का ही अंक सच मान लिया था, पर अंदर ही अंदर बहुत घबराया हुआ था। ज्यूं ज्यूं नतीजे का समय नज़दीक आता गया, त्यूं त्यूं मेरी हालत बिगड़ती गई। पर माँ शारिका को कुछ और ही मंज़ूर था। ग्यारह बजे खबर आई कि परिणाम आज के बदले कल आएगा। मैं यह सुन कर बहुत खुश हुआ। परिणाम कल निकलने का मतलब था कि कल हमें फिर परबत जाना होगा, जहाँ फिर से चावल के दाने उठाये जायेंगे। मेरे लिए यह एक अच्छा अवसर था। मेरे बाकी मित्र यह सुन कर खुश नहीं थे। उन्हें डर था कि पता नहीं कल क्या होगा? किस का अंक सम निकलेगा और किस का असम?

❄❄❄

पास और फेल

रात को मैं देर तक नहीं सो सका। ज्यूं ही मुझे नींद आने लगती, मैं कोई न कोई भयानक स्वप्न देखता और झुंझलाकर जाग जाता। तब मैं ने सोचा कि सोने की कोशिश करना ही गलत है। मैं ने लिहाफ तले बैठ कर ही इंद्राक्षी का पाठ पढ़ना शुरू किया। यह पाठ मैं तब तक पढ़ता रहा जब तक कि नीचे से विजय ने आवाज़ न दी। मैं ने घड़ी देखी। पांच बज रहे थे। मैं ने मुंह हाथ धोया और मित्रों के साथ परबत की ओर निकल पड़ा।

मेरा एक और मित्र गुरगारी मुहल्ला में रहता था। उसका नाम था चमन लाल। पढ़ने में वह हम से भी दो कदम पीछे था। मेरे साथ उसकी अच्छी बनती थी क्योंकि दूसरे लडकों को उपनाम देने में हम दोनों एक समान थे। जय किशन हम से एक आध इंच ऊंचा था, नाम दिया था 'फ्रस'। मोती लाल की आंखें सदा शराबियों जैसी लगती थीं, उसको नाम दिया था 'ठरु'। यूसुफ एक बार चमचम करती स्वेटर पहन कर आया, उसको नाम दिया 'ज़रबाब'। प्राण नाथ बड़ी ज़मीन का मालिक था और वह हर दिन चावल और खाद की नई नई किस्मों के बारे में बताता, उसका नाम रखा 'खंडु खाद'। रशीद की खोपड़ी आधी साफ थी, नाम रखा था 'टिनि'। क्या क्या कहूं?

गुरगारी मुहल्ला के समीप पहुंच कर मुझे ध्यान आया कि चमन को भी साथ लिया जाए। मैं ने उस के घर जाकर उसे पुकारा। उसका पिता जाग गया और खिड़की खोल कर मुझे देखने लगा। मैं ने कहा, ''माहरा, चमन कहाँ है? क्या हमारे साथ परबत आयेगा?'' उस ने अजीब सा मुँह बनाया और बोला, ''उसे परबत जाने की क्या ज़रूरत है? वह पास है।'' यह कह कर उसने खिडकी बंद की और अंदर चला गया। मेरी हालत देखने योग्य थी। मेरे मित्रों ने मुझे कोसा। बोले, ''उसे बुलाने की क्या आवश्यकता थी?'' मैं ने उन से क्षमा मांगी।

ऐसी बात नहीं थी कि चमन का परिणाम हम से पहले निकला था। वास्तव में उस के पिता का मामा साधु बना था। नाम था काकूजी। काकूजी कभी कभी उन के घर आता और चमन उस की बहुत सेवा करता, कुछ पिता के भय से और कुछ अपने स्वार्थ के लिए। परीक्षा से बहुत पहले ही काकूजी ने चमन के घर पर डेरा डाला था। उसका चिमटा और कमन्डल भी उसके साथ था जिसकी देखभाल करने की जिम्मेदारी चमन की थी। जब चमन के पिता ने काकूजी से चमन की परीक्षा के बारे में बात की और यह भी कहा कि वह मेहनत भी नहीं करता है, तो वह बोला, ''क्या करेगा मेहनत करके और पढ़ के? जाओ अपना काम करो। मैं मंत्र पढ़ा हुआ प्रसाद देता हूं। परीक्षा के समय घर से निकलने पर उसे थोड़ा थोड़ा खिलाना। बस फिर देखो! वह वहां कुछ लिखे या न लिखे, पास अवश्य होगा। तुम्हें शक हो तो बोलो, मैं अभी से उस के लिये फर्स्ट डिविजन लिख कर रखता हूं।'' यह सारी बातें मुझे चमन ने ही बताई थीं। मैं ने तब उसे प्रार्थना की थी कि मुझे भी काकूजी के पास ले जाये। वह स्वयं तो इस के लिये तैयार हुआ पर उस के पिता ने इस की आज्ञा नहीं दी। पिता ने कहा, ऐसी राज़ की बातें किसी को बताया नहीं करते।

आगे चल कर हमें दो और लड़के मिले। वह भी परबत जा रहे थे। जब हम ने उनसे कल हुई चावल के दानों की घटना के बारे में बताया तो वह ठहाके मार कर हंसने लगे। वह बोले, ''पास या फेल

थोड़े ही चावल के दानों से देखा जाता है! वह देखा जाता है कंकरों से।'' हम ने सोचा, तब तो हम से गलती हो गई है। आगे कोई और गलती न हो, इसलिए हम उन के साथ साथ ही चलने लगे।

गणेश बल से निकल कर हम उस जगह पहुंचे जहां हमें कंकर उठा कर अपना पास फेल देखना था। उन दोनों लडकों ने अपनी किस्मत पहले देखी। उन में से एक पास हुआ और एक फेल। जो फेल हुआ, वह वहीं एक पत्थर बर बैठ कर रोने लगा। दूसरा लड़का उस को चुप कराने में लगा। उसे देख कर हम अपनी किस्मत देखना ही भूल गये। मैं उस के पास गया ओर कहा, ''अरे यार, तुम कंकरों की बात को सच मान रहे हो? क्या पता, भगवान तुम को भी पास ही करदे। उठो, गणेश जी का नाम लो और घर चले जाओ'' मैं उस से यह बात कह ही रहा था कि राजा ने मुझे कहा, ''तब हमें क्यों कंकर उठा कर देखना है? वैसे ही जो किस्मत में होगा, मिलेगा। अभी से क्यों परेशान हो लें?'' मैंने कहा, ''तो क्या? पास फेल नहीं देखेंगे?'' उस ने जवाब दिया, ''भई, जब उस लड़के को नसीहत दे रहे हो कि कंकर ही सब कुछ नहीं है, तो अपने आप को क्यों नहीं कहते?'' मैं ने सोचा, राजा शायद सच ही बोल रहा है। यह अलग बात थी कि उस को आज कंकर उठाने में डर लग रहा था।

वह दोनों लड़के घर की तरफ चल दिये। फेल हुआ लड़का अब भी रो रहा था पर दूसरा उसकी हिम्मत बंधा रहा था। उन के जाने के तुरंत बाद हम ने पेड़ के नीचे मीटिंग की और इस बात पर सोच विचार किया कि हमें कंकर उठाने की ज़रूरत है या नहीं? हम फेल हुये लड़के को देख कर पूरी तरह से टूट चुके थे। निका ने अपना फैसला सुनाया। बोला, ''इस बार पास फेल होने का फैसला माँ शारिका के ऊपर छोड़ते हैं। वही सब को पार लगाने वाली है। अभी से अपने मन को क्यों दुखी करना है?'' यह बात हम सब को पसंद आई।

परिक्रमा करने के बाद हम फिर काठी दरवाज़ा पहुँचे। सब्ज़ी बेचने वाली औरत आज भी उसी जगह बैठी थी। हम ने इधर उधर देखा। पहले दिन वाला अधेड़ अवस्था का आदमी कहीं दिखाई नहीं दिया। अचानक सब्ज़ी बेचने वाली औरत ने मुझे देख लिया। उस ने मुझे आवाज़ देकर बुलाया। हम उस के पास पहुंचे तो उसने अपनी जेब से एक अठन्नी निकाल कर हमें दी और बोली, ''कल तुम अपनी हंद उठाना भूल गये थे। मैं ने वह एक दूसरे खरीदार को बेची और तुम्हारे पैसे वापस आ गये।'' यह सुन कर हम खुश हो गए। निका बोला, ''आज की बोहनी अच्छी हुई है, दिन भी ठीक ही निकलेगा। मुझे ऐसा लगता है कि हम सब पास होंगे।'' मैं ने भी हाँ कर ली। इस के बाद हम हँसते हँसते घर की तरफ चल दिये और निका के घर पहुँच कर डेरा जमा लिया।

हमें मुश्किल से घर पहुंचे आधा घंटा हुआ होगा कि बाहर से किसी ने आवाज़ दी, ''अरे निका।'' हम ने बाहर देखा। निका का दोस्त अली मीर बाहर आंगन में एक अखबार लेकर खड़ा था। हमें देख कर वह दौड़ता हुआ अंदर आया और निका से बोला, ''मां की कसम, आज बिलकुल नहीं छोड़ूंगा। आज मुझे काकनी के हाथ की बनी हुई मछली खिलानी ही पड़ेगी। बा-खुदा, एक अच्छी खबर लेकर आया हूं।'' निका ने मछली खिलाने का वादा किया। अली मीर ने अखबार खोला और हमारे सामने रख दिया। इस अखबार में हमारा परिणाम छपा हुआ था। अली मीर का पिता एक प्रेस में काम करता था और वही यह अखबार सवेरे सवेरे अपने घर लाया था। हम ने परिणाम देखना शुरू किया लेकिन घबराहट में हमें अपना रोल नम्बर दिखाई नहीं दिया। अली मीर ने अखबार हमारे हाथ से छीन लिया और बोला, ''तुम लोग देख क्या रहे हो। तुम सब पास हो और मैं भी पास हूं।'' इस के बाद उस ने हमें हमारे रोल नम्बर दिखाये। सचमुच हम सब पास थे। हम ने एक दूसरे को सीने से लगाया। बात फैल गई

और सब को मालूम हुआ कि हम मैट्रिक में पास हुए हैं। सब के घर वाले निका के घर पर आये। बॉयटोठ भी आया। थर्ड डिविजन पाने पर हम सब को डाँटा पर अंदर से वह खुश था। अली मीर की माँग सुन कर वह उलटे पाँव मछली लाने के लिये बाज़ार गया।

उस दिन निका के घर पर सचमुच जैसे मेला लगा। मछली की बात सुन कर किस के मुंह में पानी नहीं आता? पर मैं मन से दुखी था। चमन का रोल नम्बर अखबार में नहीं था, याने वह फेल था। मेरी समझ में यह नहीं आ रहा था कि उस के पिता ने उसे प्रसाद खिलाने में कोई गलती की या काकूजी का दिया हुआ प्रसाद ही गलत था।

रेडियो पर परिणाम सुनते सुनते अच्छे अच्छों के पसीने छूटते हैं। जब परिणाम पढ़ने वाला वन वन टू , वन वन फोर, वन वन सेवन, वन टू वन ... बोलता है तो दिल की धड़कन बढ़ जाती है, साँस रुक जाती है। मैं ने कई बार ऐसे समय पर बड़े बड़े बलवीरों को कमज़ोर पड़ते देखा है। सुनने वालों के चेहरे का रंग उड़ जाता है। हम परिणाम आने की बे-सब्री से प्रतीक्षा कर रहे थे, पर मन में कोई भय न था। अखबार पहले से नहीं देखा होता तो हमारी हालत भी खराब होती।

बारह बजे हम ने रेडियो आन किया। परिणाम आना शुरू हो गया। हम ठहाके मार मार कर हंस रहे थे और गिन रहे थे कि किस रोल नम्बर से किस रोल नम्बर तक लडके फेल हुये हैं। निका हमें साथ साथ में यह बताता कि अभी किस स्कूल का परिणाम आ रहा है और उस के बाद किस स्कूल का आयेगा। जब हमारा रोल नम्बर निकट आने लगा, हमारी हालत खराब होने लगी। भय था कहीं ऐसा न हो कि परिणाम सुनाने वाला हमारा रोल नम्बर ही न बोले। पर ऐसा नहीं हुआ। हमारा नम्बर ठीक अपनी बारी पर आया। राजा चिल्लाया, ''असली बधाई अब है।'' उस के बाद मत पूछिये कि पास होने पर हमें कितना पैसा मिला और अली मीर ने कितनी मछली खाई। पर अफसोस, चमन रेडियो पर भी फेल ही था। मैं ने सोचा, हाय, यदि उसका पिता उसे हमारे साथ परबत आने देता, तो माँ शारिका उसे भी पास कर देती, ठीक उसी तरह जिस तरह उस ने हमें किया।

❄❄❄

शादी की दावत

कालेज से घर आते हुये जब हम देवान बाग पहुंचे, हमारी नज़र बहुत दूर एक मंडप पर पडी। मंडप नया और रंगदार था। राजा ने कहा, ''लगता है किसी की शादी हो रही है। मैं ने बहुत समय से शादी की दावत नहीं खाई है।'' मैं ने भी हाँ कर ली। शादी की दावत की बात सुन कर हमेशा मेरे मुँह में पानी भर आता था। राजा ने मेरे कन्धे पर हाथ रखा और बोला, ''हमारे रिश्तेदारों में किसी की शादी नहीं है क्या?'' मैं ने कहा, ''नहीं है।'' राजा ने आह भरी।

थोडा चल कर हम मंडप के पास पहुँचे। यह मंडप सडक का एक हिस्सा बंद करके लगाया गया था। सड़क के आगे बडे बडे पत्थर रखे गये थे ताकि वहाँ से कोई गाडी न गुज़रे। दो तीन आदमी कनात बांध रहे थे और कुछ आदमी मंडप के अंदर कालीन बिछा रहे थे। बाहर कई नवजवान लडके इधर उधर दौड रहे थे और पांच छः बुज़र्ग आपस में बातें कर रहे थे। मैं यह सब देखने में व्यस्त था। मंडप के अंदर तीन लडके बंटिंग लगा रहे थे मगर वह यह काम ढंग से नहीं कर पा रहे थे। मेरे मन में आया कि मैं उन्हें सही तरीका बता दूं मगर राजा का चेहरा देख कर मैं चुप रहा। वह अक्सर मुझे यह कह कर झाड देता कि मैं बे-वजह हर काम में अपनी टांग अड़ाता हूं।

राजा ने मुझे वहीं रुकने का इशारा किया और खुद मंडप के अंदर घुस गया। मैं सड़क पर खड़ा रहा। जब वह बहुत समय तक वापस नहीं आया, मैं उसे ढूंढने गया। राजा किसी बुर्ज़ग आदमी से बात कर रहा था। मुझे देख कर उस ने मुझे वहाँ से जाने को कहा। मैं बाहर आकर उस की प्रतीक्षा करने लगा। कोई पंद्रह मिनट बाद राजा वापस आया और बोला, ''किसी गोपी नाथ के बेटे की शादी है। आज महँदीरात है इसलिये बढ़िया मांसाहारी दावत का इन्तज़ाम किया गया है। मुझे पता चला है कि कोई बारह व्यंजन पकाये गये हैं। आचार और दही के प्याले भी हैं।''

''पर तुम्हें यह सब बताया किस ने?'' मैं ने पूछा। वह बोला, ''मैं ने मंडप वाले से दोस्ती कर ली, उसी ने बताया। वह यह भी बोल रहा था कि यह लोग बहुत पैसे वाले हैं।'' दही के प्याले की बात सुनते ही मेरे मुँह में पानी आया।

सामने एक दुकान थी जहाँ हमें निका की प्रतीक्षा करनी थी। वह एस.पी.कालेज में पढ़ता था और हमें रोज़ वहीं मिलता था। वहां से हम सब साथ में घर जाया करते थे। पर आज निका वहाँ नहीं था। दुकानदार ने कहा कि वह घर पर चला गया था और हमें भी वहीं आने को कहा था।

किताबें घर पर रख कर हम सीधे निका के पास पहुंचे। वह अपने पतलून पर इस्त्री कर रहा था। हम ने अपनी दिन भर की रिपोर्ट पेश की और मंडप वाली बात भी बता दी। जब राजा ने कहा कि किसी गोपीनाथ के लडके की शादी हो रही है तो निका मुसकुराया। उसने कहा, ''सतीश के भाई की शादी है। हम भी दावत पर जा रहे हैं।''

सतीश निका का कालेज का साथी था पर हमारे साथ उस की इतनी ज़्यादा दोस्ती नहीं थी। हम ने कहा, ''वह तुम्हारा दोस्त है, हमें क्यों बुलायेगा?'' पर उस ने नहीं माना। कहा, ''सतीश को मालूम

नहीं क्या कि हम सब साथ में ही हैं? उसी ने मुझे तुम लोगों को बुलाने के लिये भी कहा है। मैं आज कालेज से थोडा पहले इसीलिये आया था कि उस की कुछ मदद करूं।

निका ने इस्त्री नीचे पत्थर पर रख दी और कहा, ''गोपी नाथ वली सतीश के पिताजी हैं। सतीश की तरह मैं भी उन्हें बाईगाश करके बुलाता हूं। उनको भी तुम्हारे बारे में सब पता है।'' निका ने पतलून एक कील पर लटका दी और कहा, ''तुम लोग भी अपने अपने कपडे तैयार रखो। बाद में देर होगी।''

मैं ने बहुत समय से शादी की दावत नहीं खाई थी। मैं ने सतीश और निका के लिये दुआऐं की। राजा कुछ ज़्यादा ही खुश था। वह बोला, ''मैं तो बिन बुलाये भी जाने को तैयार था। यह अच्छा हुआ कि अब इज़्ज़त के साथ जाना होगा।'' निका को वह इस तरह देख रहा था जैसे उस ने राजा की सात पीढियों पर कोई बडा एहसान किया हो।

दावत आठ बजे की थी पर हम सात बजे ही पहुंच गये। इन्तज़ाम करने वाले इधर उधर भाग रहे थे। मंडप के बाहर एक जगह कुरसियाँ रखी हुई थीं जिन पर बैठ कर कुछ बुज़र्ग लोग सियासत पर बहस कर रहे थे। 'शेख अब्दुल्लाह ने क्या कहा और मीर कासिम ने क्या कहा? पाकिस्तान ने यू.एन.ओ. में क्या कहा और हिंदोस्तान ने क्या जवाब दिया।' हमें उन की बातों में कोई दिलचस्पी न थी। हम उन से दूर ही खडे रहे। निका सतीश को ढूँढ़ने अंदर चला गया।

थोडी देर के बाद निका सतीश के साथ आ गया। मैं ने सतीश से कहा, ''हम सब को बुलाने के लिये धन्यवाद।'' सतीश ने कहा, ''कैसे लोग हो? मैं तुम लोगों का भाई नहीं हूं क्या?'' हम शर्मिंदा हो गये। निका ने हमें एक जगह बिठाया और खुद सतीश के साथ अंदर चला गया।

कुछ देर के बाद निका वापस आया। उसके साथ दो और आदमी थे। निका ने हमें उन्हें नमस्कार करने को कहा। हम ने किया। उन्होंने हमें आशीर्वाद दी। बाद में पता चला, एक सतीश का मामा था और दूसरा मामा का दोस्त।

साडे आठ बजे से मेहमान आने लगे। पहले ही झुंड के साथ हम भी अंदर घुस गये। अंदर खाना खाने के लिये टाट पट्टी बिछी हुई थी। निका दौड कर एक कोने में जाकर बैठ गया और हमें भी वहीं आने का इशारा किया। आधे घंटे में जगह भर गयी।

दो लडके मेहमानों के हाथ धुलाने के लिये आ गये। उन के पीछे थालियाँ लगाने वाले थे। ज्योंही रोगनजोश डालने वाला आदमी मेरी थाली के पास पहुँचा, मैं ने कहा, ''जी मैं शाकाहारी हूँ।'' उस ने रोगनजोश का टुकडा वापस अपनी थाली में डाला। मेरी तरफ अजीब सी नज़रों से देखा और कहा, ''इतना छोटा और शाकाहारी! तुम ने अभी अभी कोई परीक्षा दी है क्या?'' मैं ने कहा, ''जी नहीं। मैं बचपन से ही शाकाहारी हूं।'' मेरे साथियों ने मेरी हाँ में हाँ मिलायी।

रोगनजोश वाले ने दूर खडे एक आदमी को आवाज़ दी, ''हे गाशु लाल।'' गाशु लाल उस की तरफ देखने लगा। उस आदमी ने कहा, ''यहाँ एक शाकाहारी है।'' गाशु लाल ने किसी और आदमी से बात की और फिर रोगनजोश वाले से बोला, ''बाल जी। ज़रा देखो, कोई और भी शाकाहारी है क्या?'' इतनी देर में बाल जी के पीछे व्यंजन परोसने वालों की लाईन लग गयी। मेरी बाईं ओर जो आदमी बैठा था, उस ने मुझे कहा, ''यह तुम ने कौन सी मुसीबत खडी कर दी? अरे शाकाहारी था तो दावत खाने ही क्यों आया?'' मुझे उसकी यह बात अच्छी नहीं लगी। मैं ने कहा, ''हम क्या खुद आये हैं? हमें सतीश ने बुलाया है।'' वह आदमी कुछ और कहने ही वाला था कि बाल जी ने ऊंची आवाज़ में बैठे हुये लोगों से पूछा, ''कोई और भी शाकाहारी है क्या?'' चार आदमियों ने हाथ खडे किये। बाल जी

ने गिनना शुरू किया, 'एक, दो, तीन, चार'। फिर गाशु लाल से कहा, ''चार हैं।'' गाशु लाल ने एक और आदमी से मशवरा किया और हमें बोला, ''चलिये, सब शाकाहारी इस तरफ को हो जाइये।'' इस के बाद उस ने उस तरफ बैठे हुये लोगों से विनती की कि वह वहाँ शाकाहारी लोगों को बैठने दें और वह इन की जगह आयें।

बैठे हुये लोगों में अफरातफरी मच गयी। कुछ लोग इधर से उधर जाने लगे और कुछ लोग उधर से इधर आने लगे। इस कार्रवाई में कोई पाँच मिनट लग गये। उस के बाद व्यंजन परोसने का काम फिर शुरू हुआ।

नई जगह पर बैठते बैठते हमारे साथ दो और आदमी जुड गये। अब हम छः हो गये। हाथ धुलाने वाला माँसाहारी लोगों के हाथ धुलाने के बाद ही हमारी तरफ आया। कुछ देर के बाद हमारे सामने थालियाँ रखी गईं। अब हम व्यंजन परोसने की प्रतीक्षा कर रहे थे मगर हमारे मामले में देर हो रही थी। मैं ने निका की मांसाहारी लाईन को देखा। सतीश भी उसके साथ बैठा हुआ था। उसने हमें हाथ से इशारा किया कि सब ठीक है ना ? हम ने भी इशारा किया, सब ठीक है।

मांसाहारी लाईन में परोसने वालों का तांता बंधा हुआ था ... रोगन जोश, मछ़, च़ोक च़रवन, हाख, मूली की चटनी, नदुर्य चुरमु आदि। वहाँ पर चावल बांटना भी शुरू हो गया। पीछे पीछे 'कलिया' परोसने वाला भी आ गया। पर हमारी थालियाँ अभी भी कोरी साफ थीं और परोसने वालों का कहीं पता नहीं था।

इंतज़ाम करने वाले लोग इधर से उधर और उधर से इधर भाग रहे थे मगर उन में से कोई भी हमारी तरफ नहीं देखता था। मैं उस दिन को कोसने लगा जिस दिन में शाकाहारी बना था। दर असल मुझे शाकाहारी बनने का शौक नहीं था मगर मेरी जन्म कुण्डली देख कर काकु महाराज ने मुझे माँस खाने से मनाह किया था। मुझे उस के शब्द आज भी याद थे। जब मेरी माँ ने मेरी जन्म कुण्डली उस के सामने रखी, तो एक नज़र देख कर ही काकु महाराज ने उसे बताया, ''बच्चे का समय थोड़ा खराब है। दो बातें याद रखो। एक यह कि हर गुरुवार को वह इंद्राक्षी का पाठ करे और दूसरा यह कि वह माँस खाना छोड दे। इस के बाद तुम देखना वह क्या से क्या बनेगा। तुम्हें भी वह फर्श से उठा कर अर्श पर पहुंचा देगा।'' मैं अंदर ही अंदर जल रहा था। घर में आठ दस दिन बाद खाने में गोश्त का एक टुकडा मिलता था, वह भी बंद हो गया। मेरी माँ काकु महाराज से बहुत डरती थी। वह उसके ससुर का बडा भाई था। नतीजा यह निकला कि मुझे ज़बरदस्ती शाकाहारी बनना पडा।

काकु महाराज की इस बात को थोड़ा ही समय हुआ था कि गाडु बतु (घर देवता को मछली और भात खिलाने का पर्व) का समय आ गया। मेरे ननिहाल वाले गाडु बतु का त्योहार बहुत धूम धाम से मनाते थे। मेरी नानी उस दिन अपने सब नज़दीकी रिश्तेदारों को खाने पर बुलाती थी। घर में जैसे मेला लगता था। बडे तो अलग, हम बच्चे ही सोलह सतरह हुआ करते थे। मेरी नानी अपने हाथों से मछली पकाती थी। वह मछलियों के साथ मूली भी डालती। आदमी खाना खा कर आधे घंटे तक थाली और हाथों को चाटता रहता। मैं अपनी नानी का बडा प्यारा था। वह मछली का एक टुकडा मेरे दूसरे दिन के खाने के लिये सम्भाल कर रखती थी। जब मैं इस बारे में उस से पूछ लेता तो वह सौ सौ बार मेरी बलायें लेती।

पर इस साल का गाडु बतु मुझे सदा के लिये याद रहा। मुझे हाक और स्वच़ल के साथ खाना दिया गया। सब लोग मज़े ले लेकर मछली खा रहे थे। मैं हर खाने वाले के मुंह को तकता रहा और आहें

भरता रहा। मेरी हिम्मत बढाने के लिये मेरी माँ ने भी उस दिन मछली नहीं खाई। माँ थी ना! माँ माँ ही होती है।

रात हो गई और सब सो गये। मेरी आंखों में नींद नहीं थी। मुझे हर तरफ मछलियाँ ही मछलियाँ दिखायी दे रही थीं। जब बेकरारी बहुत बढ़ गई तो मैं उठ खडा हुआ और चुपचाप किचन में घुस गया। सब लोग मस्त नींद में थे। मैं ने मछली का एक टुकडा कागज़ में लपेट कर निकाला और बिस्तर में बैठ कर चुप चाप खाने लगा। मगर मेरी किस्मत खराब थी। मछली का एक कांटा मेरे गले में अटक गया। पहले तो मैं ने अपने आप को सम्भाला और आवाज़ किये बिना ही खांसने लगा। जब उस से कुछ फायदा नहीं हुआ तो मैं ज़ोर से चिल्लाया। मेरी चीख सुन कर सब लोग जाग गये। फिर कितना बडा तूफान खडा हो गया, यह मत पूछो। सूखे चावल खिलाकर मेरे गले में अटका कांटा तो निकाला गया पर मुझे बहुत मार पडी। मेरी नानी को मेरी मार खानी बहुत बुरी लगी। उस ने जैसे तैसे मुझे और पिटने से बचा लिया। काक् महाराज की बात को न मान कर मेरा बुरा ही हुआ। मैं उस साल फेल हो गया। उस दिन के बाद मैं पूरा शाकाहारी बन गया।

मेरे खयालों को झटका लगा। गाश् लाल एक दूसरे आदमी को साथ में लाया और उसे बोला, ''शिबन जी, थालियाँ उठाओ।'' शिबन जी सब थालियाँ उठा कर ले गया। मैं ने अपने साथ वाले की तरफ देखा। वह समझ गया कि थालियाँ उठाने की वजह से मैं कुछ परेशान हुआ हूं। उस ने मेरे कान में कहा, ''हम थोडे ही लोग हैं ना! इसलिये वह वुरबल से ही थालियाँ परोस कर लायेंगे।'' मेरी जान में जान आई। शायद गाश् लाल ने ऐसा पहले ही कहा होगा और चूंकि मैं मछलियों के मामले में खोया हुआ था इसलिये मैं ने सुना नहीं होगा।

दस पंद्रह मिनट के बाद तीन आदमी हमारी थालियाँ लेकर आ गये। दम् ओलुव, व्वज़ुज च़ामन, लॅदुर च़ामन, च़ॉक्य वांगन, नदुर्य आदि के अलावा नदुर्य चुर्म् और म्वंजि आंचार भी था। मैं ने फट से खाना शुरू किया। इस बीच मुझे निका पर नज़र पडी। वह दूसरा बडा रोगनजोश लेकर बांटने वाले से इसरार कर रहा था कि राजा को भी एक और रोगनजोश देदो। राजा दूसरा रोगनजोश लेने पर मजबूर हुआ।

हमारी थालियाँ रखने के बाद हमारे पास कोई आदमी यह पूछने नहीं आया कि आप लोग कुछ लेंगे तो नहीं? सब लोग माँसाहारी लोगों की मेहमान नवाज़ी कर रहे थे। मुझे याद आया, दही का प्याला तो आया ही नहीं। मैं ने एक आदमी को बुला कर कहा, ''माहरा, आप लोग दही का प्याला ही भूल गये हैं।'' उस ने यह बात दूसरे को बता दी और दूसरे ने तीसरे को। अचानक मेरी नज़र गाश् लाल पर पडी। मै उस के पास गया और कहा, ''माहरा, हमें दही का प्याला ही नहीं मिला।''

गाश् लाल ने मुझे तीखी नज़रों से देखा। बोला, ''दही के प्याले तो हैं ही नहीं?'' मैं ने कहा, ''माहरा, हम ने कुछ देर पहले ही वुरबल में जाकर पता किया है। दही के प्याले हैं।'' गाश् लाल का चेहरा लाल हो गया। उस ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और बोला, ''बेटे, बात यह है कि दो ही सौ प्याले बनाये थे। पहली ही जमात में ढाई सौ लोग आ गये। किसी को दें और किसी को न दें, ऐसा कैसे हो सकता था? इसलिये हम ने फैसला किया कि दही के प्याले नहीं देंगे। आजकल एक अजीब सी बात हो रही है। जिन को दावत दी जाती है, वह बाद में आते है। पर जिन को दावत नहीं दी जाती, वह पहले आ जाते हैं। अब तुम ही बोलो, जो कुछ पकाया गया है, वह पूरा कैसे पडेगा।'' मेरी हालत देखने के काबिल थी। मेरा मासूम चेहरा देख कर गाश् लाल मेरे कान में बोला, ''मुझे लग रहा है कि मेरे रवी जी

की तरह तुम्हें भी दही बहुत प्यारा है। तुम खाना खा लो, मैं तुम्हें चुपके से एक प्याला दे देता हूँ। पर खबरदार, किसी को मत बताना। घर जाकर खा लेना।'' मैं ने उसे यकीन दिलाया।

मैं वापस अपनी थाली के पास पहुँचा। मन बहुत परेशान था। ''कहीं ऐसा न हो कि गाशु लाल मुझे दही दिये बिना ही निकल जाये?'' पर मैं ने अपने आप को दिलासा दिया, ''नहीं नहीं, ऐसा नहीं होगा। गाशु लाल बहुत अच्छा आदमी है।'' सतीश मुझे देख रहा था। उसने इशारे से पूछा, क्या बात है? मैं ने कहा, सब ठीक है।

मुझे गाशु लाल की बात बार बार याद आती थी। सच भी है, जब किसी को बुलाया ही नहीं जाता है तो बिन बुलाये आने का क्या मतलब है? क्या यह अपनी बे-इज़्जती कराने के बराबर नहीं है? उनका बेड़ा गरक हो!

खाना खाने के बाद मैं बाहर निकला। मेरे दोस्त भी आ गये। मैं ने गाशु लाल को ढूँढ़ना शुरू किया मगर वह नहीं मिला। मैं ने एक आदमी से पूछा, ''माहरा, गाशु लाल किधर है?'' उस ने मेरी बात का जवाब तो नहीं दिया पर मेरे सिर पर हाथ रख कर बोला, ''क्या तू जिगरी का लडका है?' मैंने कहा नहीं, मैं काकनी के बेटा हूं। इस से पहले कि मैं उससे पूछों आप कौन है, वह वहाँ से चला गया। निका ने मेरा हाथ पकडा और मुझे एक तरफ ले जाकर बोला, ''तुम हर बात को लम्बा क्यों कर रहे हो। हमें जाना है।'' मैं ने कहा, ''पर गाशुलाल से तो मिल कर जाना होगा ना? वह मुझे ढूंढ़ते ढूंढ़ते परेशान नहीं होगा क्या? और सतीश से भी तो मिलना है। वह कहाँ है?''

''सतीश से तुम्हें क्या काम है? वह बेचारा अपने काम में परेशान है।'' निका ने कहा। हम सब घर की तरफ चल दिये।

रास्ते में राजा ने निका से पूछा, ''कल जब मैं कालेज से वापस आऊंगा तो मैं सतीश के पास जाऊँ क्या उसका हाथ बटाने के लिये?''

निका अपना आपा खो बैठा। उसने राजा से कहा, ''तुम्हारा दिमाग ठीक है ना? मैं इन लोगों को जानता तक नहीं। मैंने भी दिन में तुम्हारी ही तरह यह मंडप देखा था और उस के अंदर जाकर सब पता कर लिया था। मुझे भी बहुत समय से शादी का भोज खाने की इच्छा थी और तुम लोगों को भी। बताओ क्या चोरी की?''

मेरे चेहरे का रंग फ़क़ हो गया। मैने पूछा, ''तो यह क्या सतीश का घर नहीं था? तुमने कहा था ना कि सतीश के भाई की शादी है?''

''सतीश नर्सिंग गड में रहता है। उसका कोई भाई है ही नहीं। वह भी हमारी तरह ही बिन बुलाये आया था। मैंने उसे पहले ही सब समझा कर रखा था।'' निका ने कहा।

''तो फिर वह सतीश का मामा?'' मैंने पूछा।

''वह सतीश का मामा नहीं था, डेकोरेशन वाला था। मैंने उसे जान बूझ कर तुम लोगों के पास लाया था ताकि तुम को कोई शक न हो।''

मेरे पैरों के नीचे से मानो ज़मीन खिसक रही थी। राजा का चेहरा काला पड गया था। निका ने मेरे सर पर हाथ रखा और कहा, ''यह सब छोडो, इन बातों में ज़्यादा ध्यान नहीं देना चाहिये।'' मैने कहा, ''मुझे एक और परेशानी हो रही है। मैं सोच रहा हूं कि गाश लाल कहीं दही का प्याला लेकर हमारे घर पर न आ जाये और हमारा पोल खुल जाये?

❄❄❄

शेर का शिकार

मामला बहुत संजीदा था। सच पूछो तो मेरे चेहरे का रंग कब का पीला पड़ चुका था, फिर भी मैं बहादुर होने का ड्रामा कर रहा था। हमारी टीम में सब से अच्छी सेहत वाला लडका परवेज़ था। वह मन ही मन में कुछ पढ़ रहा था। मैं ने ज्योंही उसे छेडा, वह पागल कुत्ते की तरह मुझ पर टूट पडा मगर ज़बान से कुछ न बोला। जलाल दीन और राज नाथ एक दूसरे को इस तरह पकडे हुये थे मानो उम्र भर अलग न होने की कसम खाई हो। जय कौल हिम्मत बटोरने के लिये सिग्रेट के कश ले रहा था, इस बात से बे-खबर कि सिग्रेट सुलगाया ही नहीं है। गुलाम रसूल कुछ सोच रहा था, शायद हालात का जायज़ा ले रहा था। वह टीम लीडर था इसलिये पूरी ज़िम्मेदारी उस के ऊपर थी। हनीफ खान का चेहरा लाल था पर मुँह से कुछ बोल ही नहीं पा रहा था। मेरी समझ में यह नहीं आ रहा था कि वह खौफ से लाल हुआ है कि उसे जोश आया है।

तम्बू का एक कोना उठा कर परवेज़ ने फिर बाहर की तरफ देखा। जिगर थाम कर मैं भी एक छोटी सी दरार से बाहर देखने लगा। शेर की आंखें चमक रही थीं और वह हमारी ही तरफ देख रहा था। खौफ की वजह से मुझे शेर की एक ही आँख दिखाई दे रही थी पर गुलाम रसूल का कहना था कि दोनों आंखें चमक रही हैं। किसी को भी बोलने की इजाज़त नहीं थी। हम सब इशारों इशारों में ही बात कर रहे थे। गुलाम रसूल के कहने पर मैं ने फिर एक बार बाहर देखा। अब मुझे भी शेर की दोनों आंखें साफ दिखाई दे रही थीं। राज नाथ ने भी इस बात की तायीद की। जलाल दीन को शेर की आंखें तो नहीं दिख रही थीं मगर उसे उस के पानी पीने की आवाज़ साफ सुनाई दे रही थी। जलाल दीन ने हमारे कान में कहा, ''बा-खुदा, शेर पानी को हिला हिला कर पी रहा है। मैं यहाँ बैठ कर भी उस की आवाज़ बराबर सुनता हूं।'' जय कौल को उस की बात रास नहीं आई। उस ने कहा, ''मैं ने फिल्मों में देखा है, शेर कभी भी पानी को हिला हिला कर नहीं पीता है।'' जलाल दीन उसे कुछ बोलना चाहता था मगर गुलाम रसूल को देख कर चुप हो गया। हम ने एक बार फिर दरार में से देखा। बाहर अंधेरा था पर हम आंखें मूंद मूंद कर यह देखने की कोशिश कर रहे थे कि आगे क्या होगा ?

राज नाथ को पीछे धका देकर मैं आगे आया। मैं ने देखा, शेर सचमुच पानी पी रहा था। पानी पीने के बाद वह खड़ा हो गया और एक अंगडाई ली। उस का कद देख कर मैं डर गया। हालांकि अंधेरे में साफ नहीं दिखाई दे रहा था मगर फिर भी मेरे अंदाज़े के मुताबिक उस का कद छः फुट था। मैं ने ज्योंही उस की अंगडाई लेने की बात परवेज़ को बताई, उस ने भी डरते हुये दरार में से झाँका। पहले पहले तो उस को कुछ भी दिखाई नहीं दिया। वह अब भी समझ रहा था कि शेर पानी पी रहा है। पर जब उस ने ध्यान से देखा तो उसे भी शेर खडा हुआ दिखाई दिया। उस के कहने के मुताबिक शेर पांच फुट लम्बा था।

अचानक राज नाथ के मुँह से चीख निकल गई, ''अरे मर गये।'' उसकी चीख सुन कर हम एक दूसरे पर गिर पड़े। किसी की भी समझ में नहीं आया कि राज नाथ क्यों चीखा। जब गुलाम रसूल ने उस से पूछा, उस ने हैरान होकर कहा, ''आप लोगों ने शेर की दहाड नहीं सुनी ?'' मैं ने और गुलाम रसूल ने इनकार में सिर हिलाया पर जलाल दीन ने इकरार किया। कहा, ''बा-खुदा, मैं ने खुद भी शेर की खतरनाक दहाड़ सुनी थी पर मैं इसलिये चुप रहा कि तुम लोग डर न जाओ।'' जलाल दीन की

बात सुन कर हमारी आधी जान निकल गई। इस का मतलब साफ था कि शेर हमें खाने की तैयारी कर रहा था। जय कौल ने अब सिग्रेट ज़मीन पर रखा था। शायद उसे एहसास हो गया था कि सिग्रेट सुलगाया ही नहीं था।

मैं उस समय को कोसने लगा जब मैं जलाल दीन की बातों में आकर उस के साथ एडवांचर करने निकला था। दिल ही दिल में मैं ने अपने माता पिता से माफी माँगी कि मैं आप लोगों के लिये कुछ न कर सका और अब बीस साल की उम्र में ही शेर के हत्थे चढ रहा हूँ। मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े। एक एक करके मुझे मेरे सब यार दोस्त व रिश्तेदार याद आने लगे। देखते देखते मैं दहाडें मार मार कर रोने लगा। मुझे देख कर सब मेरे साथ साथ रोने लगे। हमारा आखिरी समय आ गया था इसलिये हम सब ने एक दूसरे को कस कर पकड लिया। मैं मन ही मन यँद्राखी का पाठ पढने लगा।

टीम में हम कुल आठ आदमी थे। इन में छ: यानी गुलाम रसूल, परवेज़, जय कौल, राज नाथ, जलाल दीन और मैं एडवेंचर करने वाले थे और दो यानी हनीफ खान व कसाना कुली थे। असल में हम कुल ग्यारह आदमी होने चाहियें थे पर मेरे तीन दोस्त जो हमेशा मेरे साथ ही हुआ करते थे, इस बार मेरे साथ नहीं आये। कहने को तो उन्होंने कह दिया कि वह किसी काम में व्यस्त हैं पर मुझे पूरा यकीन था कि वह जंगल की तरफ जाने से डरते थे। मेरे लाख मनाने के बवजूद भी वह नहीं माने और हमारे साथ आने से साफ इन्कार किया।

आधे रास्ते में पहाडी की चढाई चढते हुये एक गडबड हो गई। एक दो-रास्ते पर हनीफ खान और कसाना हम से बिछड़ गये। हम आगे थे और हम एक रास्ते से निकल गये। वह कुछ देर बाद पहुंचे और दूसरे रास्ते से निकल गये। इस बात का हमें उस समय पता नहीं चला। जब हम दोपहर को एक छोटी मर्ग (पहाडी पर एक बडी समतल जगह) पर पहुंचे, तो अपनी प्यास बुझाने के लिये हम ने पानी ढूंढना शुरू किया। मगर अफसोस, पानी और दूध उस सामान के साथ रह गया था जो हनीफ खान व कसाना के पास था। हम प्रतीक्षा करते रहे पर वह नहीं आये। कोई दो घंटे बाद गुलाम रसूल ने हमें आगे बढने का हुक्म दिया। हमारी टांगों में जान ही नहीं थी फिर भी टीम लीडर के कहने पर हम चल पड़े। जैसे तैसे हम कोई पांच बजे बडी मर्ग पर पहुंचे और डेरा डाल दिया। पास में ही एक तालाब था। हम सब ने इस तरह पानी पीना शुरू किया जैसे अगले एक साल तक हमें पानी मिलने की आशा ही न हो। थोडी देर के बाद कसाना व हनीफ खान भी पहुंच गये। उन की हलात हम से भी ज़्यादा खराब थी। पानी अपने साथ होकर भी उन्होंने रास्ते में पानी नहीं पिया था। हनीफ खान ने कहा कि रास्ता खोकर वह बहुत परेशान थे और सिर्फ हमें ढूंढने की कोशिश करते रहे।

पहले हम सब तम्बू गाडने में लगे। उस के बाद गुलाम रसूल ने सब लोगों में काम बांट दिया। जलाल दीन व राज नाथ को खाना बनाने का चार्ज दिया गया। परवेज़ व जय कौल ने तम्बू के इर्द गिर्द नाली खोदने की ज़िम्मेदारी ली। हनीफ खान और कसाना तालाब से पानी लाने में लग गये। मैं कैम्प फायर के लिये लकडियाँ ढूंढने लगे। गुलाम रसूल आस पास के इलाके का जायज़ा लेने लगा। गरज़ हर आदमी अपने अपने काम में जुट गया।

जंगल में अंधेरा जल्दी हो जाता है। खाना खाने से पहले हम आपस में बातें करने लगे। हनीफ खान अपनी बहादुरी की कहानियां सुना रहा था। बंदूक व बंदूक की लाईसन्स रखने की वजह से वह अक्सर हाईकिंग करने वालों के साथ जाता ताकि उन्हें जंगली जानवरों के हमले से बचा सके। इस से उस की अच्छी कमाई होती थी हालांकि उस का कहना था कि अब तक उस का किसी भी जंगली

जानवर के साथ मुकाबला नहीं हुआ। हनीफ खान की सेहत अच्छी थी मगर शक्ल से डरावना था। ऐसा लगता था कि शेर और चीते उसे देख कर ही भागते रहे होंगे।

कोई नौ बजे हम ने कैम्प फायर के लिये लकडी का ढेर लगाना शुरू किया। फैसला हुआ कि कैम्प फायर के सामने बैठ कर ही खाना खायेंगे। लकडी को बस जलाने की ही देर थी कि गुलाम रसूल को कोई आवाज़ सुनाई दी। उसने कहा, किसी के चलने की आवाज़ आ रही है। हम ने चारों ओर नज़र दौडाई पर अंधेरा होने की वजह से कुछ भी न देख सके। हम ने कान लगा कर सुनने की कोशिश की। मुझे तो कुछ सुनाई न दिया मगर जलाल दीन को ज़रूर कुछ दिखाई दिया। वह बोला, ''सचमुच कोई बला तालाब की तरफ जा रही है।'' यह सुन कर गुलाम रसूल ने हमें बडे तम्बू के अंदर जाने का इशारा किया। हम सब तम्बू के अंदर आ गये और एक दूसरे से लग कर बैठ गये। तब तक गुलाम रसूल ने हालात का जायज़ा लिया। उस के यह कहने के बाद कि सचमुच किसी बला के चलने की आवाज़ आ रही है, हम सब कांप उठे। बाद मैं यह समझ में आया कि आने वाली बला एक शेर है।

यँद्राखी पढ़ते पढ़ते मैं ने गुलाम रसूल की आवाज़ सुनी। वह बहुत आहिस्ता से हनीफ खान को बंदूक लाने के लिये बोल रहा था। गुलाम रसूल के कहने के बाद ही हनीफ खान को याद आया कि उस के पास बंदूक भी है। उस ने अपनी थैली में से बंदूक निकाली। परवेज ने उसे आगे जाने का रास्ता दिया। अपनी जगह संभालते हुये हनीफ खान ने निशाना साधना शुरू किया। अब वह गोली चलाने ही वाला था कि जलाल दीन चिल्लाया, ''खबरदार! गोली मत चलाना।'' हम ने सोचा कि वह शेर के नाम से ही पागल हो गया है। मैं ने उस के माथे पर हाथ रखा, यह देखने के लिये कि कहीं उसे बुखार तो नहीं आया। उस ने मुझे धक्का दिया और बोला, ''मेरे बाप ने कहा है कि अगर शेर गोली खाकर ज़ख्मी हो जाये और मरे नहीं, तो वह बहुत ही खतरनाक हो जाता है और जो उस के सामने आता है उसे खा जाता है।'' हम ने सोचा कि शायद वह सच बोल रहा है। पर हनीफ खान यह सब सुनने को तैयार नहीं था। उस ने कहा, ''मुझे शिकार के मामले में पूरी जानकारी है और इस बारे में मुझे किसी से कुछ सीखने की ज़रूरत नहीं।''

अंदर संघर्ष चल रहा था कि शेर को गोली मारनी है कि नहीं। बाहर शेर एक टक हमारी तरफ देख रहा था। जलाल दीन ने बंदूक को अपने हाथों से पकड कर रखा ताकि हनीफ खान गोली न चला सके। गुलाम रसूल ने जलाल दीन को समझाने की बहुत कोशिश की पर वह कुछ भी सुनने को तैयार नहीं था। इतनी देर में जय कौल ने बाहर की तरफ देखा और बोला, ''शेर आहिस्ता आहिस्ता हमारी तरफ बढ रहा है।'' कसाना ने हिम्मत करके बाहर की तरफ देखा और रोना शुरू किया। वह बोला, ''शेर तम्बू के साथ लग कर बैठा है।'' हमारे पैरों तले ज़मीन खिसक गई। हनीफ खान कुछ ज़्यादा ही भयभीत हुआ और बोला, ''अब गोली चलाने का मौका ही नहीं। गोली चलाने का साफ मतलब है शेर को हम पर हमला करने की दावत देना।'' मै यँद्राखी पढना भूल ही गया। अचानक जय कौल खडा हो गया और बोला, ''मैं ने एक फिल्म में ऐसा ही एक सीन देखा है। शेर मुँह खोले खड़ा था। सामने हीरोईन खौफ से अधमरी हो चुकी थी। वह शेर से कोई छः फुट के फासले पर थी। हीरो यह सब दूर से देख रहा था पर पास आने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। शेर कभी हीरो को देखता और कभी हीरोईन को। इस के बाद वह दो कदम और हीरोईन की तरफ बढा। अब वह हीरोईन पर हमला करने ही वाला था कि हीरो को कुछ सूझा। उस के सामने सूखे घास की एक गठरी पडी हुई थी। उस ने गठरी उठायी और लाईटर से उस में आग लगा दी। फिर वह जलती हुई गठरी हाथ में लेकर शेर की

तरफ दौड पडा। ज्योंही शेर की नज़र उस पर पडी, वह हीरोईन को छोड़ कर भाग खड़ा हुआ।'' जलाल दीन ने पूछा, ''तुम्हारा मतलब है कि हम भी घास की गठरी जलायें! घास कहाँ है?'' जय कौल ने कहा, ''अरे पागल हो क्या? लॅश (तुरंत जलने वाली लकडी) है ना!'' यह कह कर जय कौल ने एक लकडी उठायी और उसे जलाया। फिर एक और लकड़ी जलायी और दोनों लकड़ियों को हाथों में उठा कर रखा। इस के बाद सब लोगों ने लकड़ियाँ जलायीं। गुलाम रसूल ने तम्बू का कोना उठाया और सब लोग जलती हुई लकड़ियां लेकर बाहर निकल आये। डरपोक होने की वजह से मैं तम्बू के अंदर ही रहा। अचानक मुझे खयाल आया कि सब लोग तो बाहर निकल गये। अगर दूसरी तरफ से शेर तम्बू के अंदर आकर मुझे खा गया तो? मैं भी उन के पीछे भागा। उस के बाद क्या हुआ, यह मत पूछो।

हम सब तम्बू के चारों तरफ घूमे। फिर तालाब की तरफ गये। न कहीं शेर था न उस की कोई परछाई। हम ने अंधेरे में ही आस पास के पूरे इलाके को छान मारा, पर कुछ न मिला। गुलाम रसूल हंस पडा। इस के बाद कुछ समझ में नहीं आया कि कौन पहले हँसा और कौन बाद में।

दर असल चांदनी में एक दिवदार की बडी शाख का साया तालाब पर पड रहा था। शाख के हिलने से उसका साया भी हिलता था और हमें उस में कभी शेर पानी पीते दिखता था और कभी हमारी तरफ देखते हुये। जंगल में ऊंचे ऊंचे दिवदार पेडों की वजह से चांदनी पूरी तरह ज़मीन तक नहीं पहुंचती थी इसलिये हमें साफ साफ कुछ भी न दिखाई देता था। असल में कहीं पर कुछ था ही नहीं। वापस आकर हम ने कैम्प फायर की लकडी में आग लगा दी।

कैम्प फायर पूरी शान के साथ जल रहा था। ट्राईपाड पर लटक रहे साबूत मुर्गे भुने जा रहे थे। जलाल दीन और जय कौल खाने पीने का सामान लगा रहे थे। गुलाम रसूल को खयाल आया कि कहीं अनजाने में कोई बंदूक का घोडा न दबा दे। उस ने हनीफ खान को आवाज़ दी और बंदूक बाहर लाने को कहा। गोलियाँ वापस निकालने के लिये गुलाम रसूल ने बंदूक की मैग्ज़ीन खोली। देखते देखते गुलाम रसूल का चेहरा फक हो गया। हनीफ खान आँखें फाड़ फाड़ कर कभी बंदूक को देखता और कभी गुलाम रसूल को।

हनीफ खान बंदूक में गोलियाँ डाले बिना ही शेर का शिकार करने निकला था। इस के बाद जिस तरह की शर्मिन्दगी उस को उठानी पडी, भगवान करे किसी और को न उठानी पडे।

❄❄❄

नबु लालु

मामला कुछ ज़्यादा ही लम्बा हो गया। नबु लालु ने सोचा ही न था कि बात इतनी बढ़ जायेगी। ऐसा आज पहली बार हुआ कि किसी ठेकेदार के साथ उस की तकरार हुई और मामला हद से बाहर निकल गया। हेड कलर्क सप्रू साहब ने बहुत कोशिश की कि झगडा भाई बन्दी से हल हो जाये पर नबु लालु नहीं माना। आफिस के सब लोग हैरान थे। नबु लालु का यह रूप उन्होंने पहली बार देखा था।

बात दर असल कुछ भी नहीं थी। अकरम खान को ड्राईवरों व क्लीनरों के लिये वर्दियाँ सप्लाई करने का ठेका मिला था। उस का कहना था कि सब से कम रेट होने की वजह से उस को यह ठेका मिला है। डार साहब, जो बडे साहब का पी.ऐ. था, ने भी इस बात की तायीद की पर नबु लालु यह बात मानने को तैयार नहीं था। केवल नबु लालु ही क्यों, निचले दर्जे के किसी भी मुलाज़िम के गले में यह बात नहीं उतरती थी। यह बात साफ थी कि बडे साहब, जिन्होंने सप्लाई आर्डर जारी किया था, रिश्वत नहीं लेते थे। वह खुद बडे ईमानदार थे लेकिन मातहत अफसरों ने निचली सतह पर ही सब कुछ तय कर लिया था। अकरम खान खुद चार टेंडर लेकर आया था और डार साहब के हवाले कर दिये थे। फिर सब ने मिल कर उस के नाम का आर्डर बना दिया। बडा साहब पूरे मामले से बेखबर था।

बडे साहब कभी भी छोटे छोटे मामलों में नहीं पडते थे। उन्हें मालूम था कि चपरासी से लेकर उन के पी.ए. तक रिश्वत लेते हैं और इस के बिना वह काम नहीं करते हैं। पर वह इन बातों की तरफ ध्यान नहीं देते थे। वह तब मामले की गहराई तक जाते जब मामला लाखों रुपये का होता। हज़ारों के मामले में वह कभी कुछ नहीं पूछते। कहते हैं उन्होंने एक बार डार साहब को साफ शब्दों में कहा था कि छोटे मुलाज़िम को अगर छोटी छोटी रिश्वत नहीं मिलेगी तो उस का गुज़ारा कैसे होगा? डार साहब ने यह बात बहुत कम लोगों को बतायी थी मगर आफिस के मुलाज़िमों से कोई बात कब तक छुप सकती है? धीरे धीरे सबको पता चल ही गया।

आज सुबह जब अकरम खान आर्डर लेने के लिये आया तो सीधा सप्रू साहब के पास पहुंचा। इधर उधर की बात करने के बाद सप्रू साहब ने डार साहब को बुलाया और तीनों आफिस से बाहर निकल गये, शायद चाय पीने के लिये। कुछ देर के बाद वह वापस आये। आर्डर लेने के लिये अकरम खान नबु लालु के पास पहुंचा। नबु लालु टाईपिस्ट-कम-डिसपैच कलर्क था। उस ने अकरम खान को गौर से देखा। फाईल में से आर्डर निकाल कर हाथ में पकडा और अकरम खान से बोला, ''मेरा चाय पानी निकालो।'' अकरम खान पुराना खिलाडी था। उस की पूरी ज़िंदगी मुलाज़िमों से लेन देन करने में गुज़री थी इसलिये किसी भी मुलाज़िम को उस से मांगने की ज़रूरत नहीं पडती थी। वह खुद सब के पास पैसा पहुँचाता था। पर नबु लालु इस आफिस में नया नया आया था इसलिये अकरम खान के साथ उस की ज़्यादा जान पहचान नहीं थी। अकरम खान ने जेब से दस रुपये का एक नोट निकाला और नबु लालु को पकडाया। नबु लालु ने नोट वापस अकरम खान की जेब में डाल दिया और बोला, ''मेरे साथ मज़ाक नहीं चलेगा। साठ हज़ार का आर्डर है। खुदा की कसम, पच्चीस रुपये से एक पैसा कम नहीं लूंगा।''

नबु लालु उम्र का छोटा था, यही कोई बीस इक्कीस का। दो ढ़ाई साल से नौकरी कर रहा था मगर इस आफिस में आये हुये सिर्फ तीन महीने ही हुये थे। खाते पीते घर से था। उसका बाप नायब

तहसीलदार था और उस की ऊपर की कमाई बहुत थी। इस वजह से नबु लालु भी अच्छा खासा पैसा खर्च करता था। पान सिग्रेट तो लेता ही था, दो कदम दूर जाने के लिये भी टांगा ढूंढता था। आफिस वाले इसी वजह से उसे नबु लालु कह कर पुकारते, इज़्जत देने के लिये कम और खिल्ली उडाने के लिये ज़्यादा।

पच्चीस रुपये की बात सुन कर ही अकरम खान को गुस्सा आया। बोला, ''तुम पागल तो नहीं हो गये हो? मैं ने पच्चीस रुपये कभी पी.ए.साहब को भी नहीं दिये हैं, तुम किस खेत की मूली हो?'' नबु लालु को भी खेत की मूली सुन कर गुस्सा आया। बोला, ''जाओ, आर्डर लेने के लिये कल आना। मैं ने अभी यह डिसपैच ही नहीं किया है।'' यह कह कर उस ने आर्डर फिर से मेज़ की दराज़ में रख दिया।

बात सप्रू साहब तक पहुँची। उस ने नबु लालु को अपने पास बुलाया और कहा, ''बेटे, अभी तुम बहुत छोटे हो। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये। खान साहब की पहचान ऊपर तक है। उस के साथ इस तरह का व्यवहार ठीक नहीं।'' यह कह कर सप्रू साहब ने अकरम खान को आवाज़ दी, ''खान साहब इधर आइये।'' खान साहब पास आया तो सप्रू साहब ने कहा, ''पंद्रह रुपये दे दो। बच्चा है, थोड़े ही इस को मारेंगे।''

अकरम खान ने बडप्पन दिखाया। बोला, ''सप्रू साहब! मैं तो दस से ज़्यादा कभी नहीं देता, पर आप बोल रहे हैं तो ठीक है। मैं आप की बात कैसे टाल सकता हूं।'' यह कह कर अकरम खान ने जेब से पंद्रह रुपये निकाले और नबु लालु को दिये। नबु लालु को कुछ ज़्यादा ही ना-गवार गुज़रा। उस ने सोचा कि डार साहब और सप्रू साहब ने खुद अच्छा पैसा लिया होगा और मुझे सिर्फ पंद्राह रुपये देकर चलता कर रहे हैं। उस ने सप्रू साहब से कहा, ''पच्चीस रुपये कुछ भी ज़्यादा नहीं है। मुझे मालूम है कि इस को इस काम में बहुत कमाना है।'' अकरम खान को नबु लालु की यह बात बहुत ना-गवार गुज़री। उस ने नबु लालु को गुस्से में कहा, ''तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हुआ है? मैं तुम्हें एक ही थप्पड से सीधा कर दूंगा।'' नबु लालु के दिमाग में उस के बाप की नायब तहसीलदारी घुस आई। वह अकरम खान से बोला, ''जाओ करो क्या करना है। चाहो तो बडे साहब को भी रिपोर्ट करो।'' नबु लालु को मालूम था कि ऐसे मालों में कोई भी बडे साहब के पास जाने की हिम्मत नहीं कर सकता है। उसे यकीन था कि बडे साहब को ज़रा भी शक हुआ तो आर्डर ही कैन्सल कर देगा।

अकरम खान को लगा कि नबु लालु कुछ ज़्यादा ही चहक रहा है, शायद इस वजह से कि उस का बाप नायब तहसीलदार था। अपने आप को कुछ कम न समझ कर अकरम खान ने नबु लालु से कहा, ''खुदा की कसम, अब एक पैसा नहीं दूंगा। बोल मेरा आर्डर मुझे देता है कि नहीं?'' नबु लालु ने साफ इनकार किया। देखते ही देखते मामला बहुत संगीन हुआ। इस से पहले कि सप्रू साहब मामले की नज़ाकत को समझते, अकरम खान खड़ा हो गया और बडे साहब के कमरे में घुस गया। वहाँ क्या हुआ, यह कोई न जान पाया क्योंकि बड़े साहब ने चपरासी को बोल कर दरवाज़ा बंद करवाया था। थोड़ी देर के बाद अकरम खान कमरे से बाहर निकला। उस ने किसी के साथ कोई बात नहीं की और अपने घर की तरफ चल पडा।

ज्योंही डार साहब को यह खबर मिली, वह दौड कर सप्रू साहब के पास आ गया। सप्रू साहब ने उस को पूरी तफसील बतायी। डार साहब ने कहा, ''मामला इतना बिगड गया? मुझे खबर क्यों नहीं की? मैं नबु लालु को खुद समझाता।'' सप्रू साहब ने जवाब दिया, ''मैं ने खुद बहुत कोशिश की कि मामला सुधर जाये पर नबु लालु अकड़ा हुआ था। उस ने किसी की बात न सुनी।''

डार साहब और सप्रू साहब बहुत उदास थे। ऐसी घटना आज पहली बार घटी थी। बडे साहब को देखते ही सब के पसीने छूटते थे, उन से रिश्वत के पैसों की बात करने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था। इसी बीच बडे साहब ने डार साहब को बुलवाया। डार साहब का चेहरा लाल हो गया। उस ने नबु लालु को बोला, ''मरवा दिया ना, अपने आप को भी और हमें भी। पता नहीं, अब क्या क्या सुनना पड़ेगा?''

दर असल बडे साहब को कहीं जाने की जल्दी थी। उस ने अकरम खान को भी दूसरे दिन आने को कहा था। डार साहब को देख कर उसने कहा, ''देख लो अपनी एडमिनिसट्रेशन! क्या कहूंगा कल मैं उस ठेकेदार को? इस लडके को कल हाज़िर रहने के लिए बोल दो।'' यह कह कर बडे साहब निकल गये।

सारी रात नबु लालु तारे गिनता रहा। नींद आंखों से गायब थी। अपने बाप से भी वह कुछ न कह पाया। दूसरे दिन क्या होने वाला है, यह सोच कर ही वह कांपता रहा। उस ने कभी यह सोचा ही न था कि अकरम खान सचमुच बडे साहब के पास शिकायत लेकर जायेगा।

दूसरे दिन सुबह बडे साहब ने अकरम खान और नबु लालु को एक साथ अपने कमरे में बुलाया। डार साहब भी साथ में था। बडे साहब ने कमरे का दरवाज़ा बंद करवाया। दरवाज़े के बाहर बाकी मुलाज़िम कान लगा कर अंदर की बात सुनने की कोशिश कर रहे थे। सप्रू साहब अपनी सीट पर परेशान हालत में बैठा हुआ था।

नबु लालु बडे साहब के कमरे में एक कोने में खडा था। उस का चेहरा पीला पड चुका था। अकरम खान कुर्सी पर बैठा था। डार साहब सामने खडा था। बडे साहब ने उसे बैठने का इशारा किया और अकरम खान से कल हुये वाकये की तफसील मांगी। अकरम खान ने पूरी बात बता दी और साथ ही कहा, ''मैं ने अपनी खुशी से दस का नोट दिया था मगर वह पच्चीस रुपये से एक पैसा भी कम लेने को तैयार नहीं हुआ। आप ही बताईये, मुझे इस काम में कितना कमाना है?''

बडे साहब ने अकरम खान की बात पूरे ध्यान से सुनी। जब तक अकरम खान बोलता रहा, तब तक नबु लालु ने हिम्मत जुटाने की कोशिश की। उस ने सोच लिया कि अगर बडा साहब मुझ से कुछ पूछता हे तो मैं साफ इनकार कर दूंगा। मैं कहूंगा कि अकरम खान झूठ बोल रहा है। अगर डार साहब उस की तरफदारी करेगा तो मैं कहूंगा कि डार साहब भी झूठ बोलता है। यह भी कहूंगा कि यह दोनों मिले हुये हैं।

लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। बडे साहब ने नबु लालु से कुछ भी न पूछा। उस का चेहरा खतरनाक हो गया। माथे पर बल पड गये। आंखें मानो आग उगल रही थीं। उस ने डार साहब से कहा, ''मुझे एक बात समझाओ, यह ठेकेदार लोग बड़े बड़े अफसरों के पास जाकर ढ़ेर सारा पैसा देते हैं। जगह जगह गिफ्ट पहुंचाते हैं। अब अगर इस छोटे आदमी ने पच्चीस रुपये मांगे तो उस की जान निकल गई। आप को भी अच्छा खासा पैसा दिया होगा क्योंकि उस के बिना तो आप भी काम नहीं करेंगे। हाँ, छोटे मुलाज़िम को नहीं देगा, क्यों?''

माहौल एकदम बदल गया। डार साहब ने सोचा था कि पता नहीं नबु लालु पर आज कौन सी आफत आयेगी, पर बडे साहब का रूप ही आज अलग था। डार साहब ने अपना सिर झुका लिया। उस की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करना चाहिये। अकरन खाम ने अपने चेहरे का पसीना पोंछना शुरू किया। बडे साहब ने उसे कहा, ''आप को इस काम में बहुत कमाना है। पच्चीस रुपये क्या चीज़

है ? ऐसे मामले लेकर मेरे पास मत आया करें। अगर आना ही है तो किसी अफसर की शिकायत लेकर आयें, लेकिन ऐसा आप कभी नहीं करेंगे।''

अकरम खान को पसीना छूट रहा था। डार साहब बडी मुश्किल से उस को लेकर बाहर निकल आया। अकरम खान सीधा अपने घर चला गया। आज वह किसी को मुंह दिखाने के काबिल ही नहीं रहा।

नबु लालु मन ही मन खुश हो रहा था। वह फूले नहीं समा रहा था। वह अब बडे साहब के कमरे में अकेला था। बडे साहब ने चपरासी को बुला कर दरवाज़ा बंद करवाया। नबु लालु की समझ में कुछ नहीं आया। वह बडे साहब को फटी निगाहों से देख रहा था। बडे साहब ने मेज़ की दराज़ में से एक छड़ी निकाली और कुर्सी से उठ खडा हुआ। फिर क्या था ? उस ने नबु लालु को छडी से इतना मारा कि उस के जिस्म पर जगह जगह दाग नमूदार हो गये। बडे साहब ने कहा, ''जुमा जुमा आठ दिन हो गये तुम्हें नौकरी करते हुये, तुम अभी से पैसा मांगने लगे! वह भी मेरे आफिस में! अकरम खान वर्दियाँ सप्लाई करेगा कि तुम्हें पैसा देगा ?'' यह कह कर बडे साहब ने एक भरपूर थप्पड नबु लालु के गाल पर मारा। नबु लालु के मुँह से चीख निकल गई और वह ज़ार ज़ार रोने लगा। इस के बाद उस ने बडे साहब से माफी माँगी। बाकी मुलाज़िम दरवाज़े में बने चाबी के सुराख में से यह सब देख रहे थे।

नबु लालु जब अपनी कुर्सी पर पहुँचा, उस की आँखें लाल थीं। दूसरे मुलाज़िम उस के पास हमदर्दी जताने के लिये आये मगर उस ने उन के साथ कोई बात नहीं की। वह अपना सिर नीचे करके रहा। मुलाज़िम वापस अपनी अपनी जगह पर गये।

कोई दो घन्टे के बाद अकरम खान वापस आया और सीधा नबु लालु के पास पहुंचा। सप्रू साहब भी आया। नबु लालु ने अपना सिर उठाया। अकरम खान ने उसे कहा, ''नबु लालु! मुझे माफ करना।'' इस के बाद अकरम खान ने अपनी जेब से पच्चीस रुपये निकाले और नबु लालु के सामने रख दिये। नबु लालु ने सप्रू साहब की तरफ देखा। सप्रू साहब ने सिर हिला कर उसे पैसे रखने का इशारा किया। नबु लालु ने पैसे उठाये और अकरम खान की जेब में वापस रख दिये। नबु लालु ने कहा, ''अब बराबर पच्चास रुपये लूंगा, तब आर्डर दूंगा।'' अकरम खान की साँस रुक गई। सप्रू साहब वापस अपनी सीट की तरफ भागा। उस की समझ में ही नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है ?

यह सोच कर कि बडे साहब के पास फिर शिकायत करने का कोई मतलब नहीं है, अकरम खान ने जेब से पच्चास का नोट निकाला और नबु लालु के हाथ में थमा दिया। नबु लालु ने मेज़ से आर्डर निकाल कर उसे दे दिया। सप्रू साहब दूर से यह सब देख रहा था। वह यह समझ ही नहीं पा रहा था कि किस ने ठीक किया और किस ने गलत।

❄❄❄